न रा
का स
उपक्रम-1 दिल्ली

इन्द्रप्रस्थ स्वर

वर्ष 11, अंक 17

जनवरी–जून, 2022

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हिन्दी के महान उपन्यासकार व संवेदनशील रचनाकार

मुंशी प्रेमचंद

की जयंती पर सादर नमन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली

अध्यक्षता: भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, निगमित मुख्यालय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दिल्ली (उपक्रम-1) के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा संगोष्ठी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 18.05.2022 को सदस्य कार्यालयों के राजभाषा संवर्ग/राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित कार्यपालकों के लिए एक दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता सदस्य (योजना/मानव संसाधन) द्वारा की गई। इस संगोष्ठी में सदस्य (योजना/मानव संसाधन) महोदय के साथ कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन–2/प्रशासन) तथा महाप्रबन्धक (प्रशासन) उपस्थित थे। संगोष्ठी में अध्यक्ष तथा अन्य अतिथियों का स्वागत पुष्प गुच्छ एवं पुस्तक द्वारा किया गया। संगोष्ठी में व्याख्यानदाताओं के रूप में डॉ सत्येन्द्र सिंह, पूर्व सचिव, संसदीय राजभाषा समिति तथा डॉ पूरन चंद टंडन, वरिष्ठ प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय को आमंत्रित किया गया। दोनों व्याख्याताओं ने क्रमशः संसदीय राजभाषा समिति की अपेक्षाएँ एवं संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रश्नावली तथा आजादी का अमृत महोत्सव और राजभाषा हिन्दी की स्थिति विषय पर व्याख्यान दिए। व्याखानों के उपरांत चर्चा सत्र रखा के साथ संगोष्ठी का समापन किया गया था। मंच का सफल संचालन नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली के सदस्य सचिव श्री संजीव कुमार द्वारा किया गया। सभी सदस्यों ने नराकास सचिवालय के पूरी टीम को एक सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

uxj jktHkk"kk dk;kZUo;u lfefr ¼miØe&1½] fnYyh

इन्द्रप्रस्थ स्वर

vad% 17 tuojh&twu] 2022

eq[; laj{kd
latho dqekj] Hkk-iz-ls-
अध्यक्ष

laj{kd
vfuy dqekj ikBd
सदस्य (योजना/मानव संसाधन)

ekxZn'kZu
jfodkar
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)

izca/k laiknd
latho dqekj
संयुक्त महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, नराकास

lg&laiknd
pUnzdyk feJk
अपर महाप्रबंधक (राजभाषा)–बी एच ई एल

fo'ks"k ;ksxnku
jhrk v:.k efyd
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की ओर से
आंतरिक वितरण के लिए प्रकाशित

'इंद्रप्रस्थ स्वर' में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली की उनसे सहमति हो, अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए नराकास (उपक्रम–1), दिल्ली किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

इस अंक में

मुख्य संरक्षक की कलम से	02
संरक्षक की कलम से	03
मार्गदर्शन	04
प्रबंध संपादक की कलम से	05
गर्व	06
आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना	10
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 54वीं बैठक	15
खुशी	15
मेरी तीर्थ यात्रा	16
तानाशाह	18
धरती माँ बड़ी माँ	21
यादों का इंद्रधनुष	22
''समय का चक्र''	23
''आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः''	24
महकते फूल	25
चुप चुप रहना सखी	25
हिंदी	26
नराकास के तत्वावधान में इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड	27
भारतीय समाज में बहुभाषिकता और अनुवाद	28
आखिर कैसे करें सर्जना?	30
बेरंग सी इस जिंदगी में कुछ तो रंग भरें	31
परोपकार भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग	33
''जीवन का सच''	35
बिजली संयंत्रों में आई.ओ.टी. की तकनीक के उपयोग	36
मसाले एवं स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव	39
नराकास (उपक्रम–1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों का विवरण	40

संजीव कुमार, भा.प्र.से.
SANJEEV KUMAR, IAS
अध्यक्ष
Chairman
दूरभाष / Phone : 011-24632930
24622796
फैक्स / Fax : 011-20818201
ई–मेल / E-mail : chairman@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गाँधी भवन
Rajiv Gandhi Bhawan
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली–110003
Safdarjung Airport, New Delhi-110003

मुख्य संरक्षक की कलम से

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली द्वारा भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण की अध्यक्षता में नियमित रूप से **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और कार्मिकों के हिन्दी में सृजनात्मक लेखन को प्रोत्साहित करने में हिन्दी गृह पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। यह पत्रिका कार्यालयों की गतिविधियों को प्रतिबिम्बित करने का प्रयास भी करती है और इससे संबन्धित कार्यालय के कार्मिकों की सृजनात्मक क्षमता का परिचय होता है। साथ ही राजभाषा के प्रति प्रेम का भाव भी उत्पन्न होता है। इस प्रकार **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** पत्रिका सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार की दिशा में किए जा रहे प्रयासों का एक समेकित रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत करती है।

यह भी प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के प्रोत्साहन एवं राजभाषा का प्रसार करने में **''इन्द्रप्रस्थ स्वर''** पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हुए संघ सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत हिंदी संबंधी गतिविधियों के वृहत प्रचार हेतु एक औपचारिक मंच भी प्रदान कर रही है।

मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में सभी सदस्य कार्यालय इसी प्रकार रचनात्मक सहयोग प्रदान करते रहेंगे और पत्रिका को रोचक बनाने हेतु अपना योगदान देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित,

संजीव कुमार

(संजीव कुमार)

ए के पाठक
A K PATHAK
सदस्य (मानव संसाधन)
Member (Human Resource)
कार्यालय/Office : 91-11-24632950
फैक्स/Fax : 91-11-24632990
ई-मेल/E-mail : memberhr@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, 'सी' ब्लॉक
Rajiv Gandhi Bhawan, 'C' Block
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

संरक्षक की कलम से

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली की पत्रिका **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** के 17वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

हम सभी इस बात से परिचित हैं कि किसी भी भाषा का विकास उसके बहुआयामी प्रयोग से ही संभव हो सकता है। गृहपत्रिका एक ऐसा मंच है जहां विभिन्न विषयों की जानकारी हिन्दी में प्रस्तुत की जाती है। इस पत्रिका में कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा के रूप में एक ओर कविता का सरस आनंद मिलता है, दूसरी ओर कार्यालय विशेष से संबंधित तकनीकी एवं अन्य लेख पाठकों का ज्ञान वर्धन करते हैं और हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के संबंध में यह पत्रिका अपने दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह कर रही है। इस अवसर पर मैं सभी रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

प्रत्येक राष्ट्र की प्रगति में भाषा और संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। भाषा एवं संस्कृति जोड़ने का कार्य करती है। इसी क्रम में, यह पत्रिका न केवल राजभाषा के प्रचार–प्रसार में वृद्धि हेतु प्रयास कर रही है अपितु यह सदस्य कार्यालयों की राजभाषा गतिविधियों को एक सूत्र में पिरोने हेतु उपयोगी कड़ी, साबित हो रही है। इस प्रकार **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** पत्रिका द्वारा सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए एक उत्तम प्रयास किया जा रहा है। यह सराहनीय है।

मैं आशा करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक आप सभी को पसंद आएगा।

अनिल पाठक

ए के पाठक

रविकांत
RAVIKANT
कार्यपालक निदेशक (प्रशासन)
Executive Director (Administration)
कार्यालय/Office : 91-11-20818221
मोबाईल/Mob. : 91-9958200644
ई-मेल/E-mail : edadmin@aai.aero

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
AIRPORTS AUTHORITY OF INDIA
राजीव गांधी भवन, ए-ब्लॉक, कमरा न. 22
Rajiv Gandhi Bhawan, A-Block, Room No. 22
सफदरजंग हवाई अड्डा, नई दिल्ली-110 003
Safdarjung Airport, New Delhi-110 003

मार्गदर्शन

यह बहुत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में निरंतर वृद्धि करते हुए **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** पत्रिका का छमाही अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

हम सब जानते हैं कि अपनी सरलता, सहजता के कारण आज हिन्दी का विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है अपितु यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। हिन्दी सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ–साथ वैज्ञानिक भाषा भी है। विश्व भर में हिन्दी समझने और बोलने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में हैं।

हमारी राजभाषा हिन्दी होने के कारण हम सभी का यह दायित्व है कि हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार हो। हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जाता है। साथ ही इस पत्रिका में विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी जानकारी प्रस्तुत की जाती है। जिससे एक कार्यालय दूसरे कार्यालय की राजभाषा संबंधी गतिविधियों के विषय में जानकारी प्राप्त कर राजभाषा कार्यान्वयन को बेहतर कर सकता है।

इसी क्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) के तत्वावधान में सदस्य कार्यालय **''इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड''** मुख्यालय द्वारा 30 मई, 2022 को ऑनलाईन पीपीटी प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन से सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को प्रेरणा भी मिलती है और निश्चित रूप से ऐसे आयोजन भविष्य में राजभाषा हिंदी को और गति प्रदान करेंगे।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि **''इंद्रप्रस्थ स्वर''** कार्मिकों की रचनात्मक प्रक्रिया का संवर्धन करेगी जिससे कार्मिकों में साहित्य की संवेदना के प्रति अधिक जागरूकता उत्पन्न होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

रविकांत

प्रबंध संपादक की कलम से

"इंद्रप्रस्थ स्वर" के 17वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1) दिल्ली के सदस्य कार्यालयों के रचनात्मक सहयोग से अब इसे छमाही रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

जैसा कि विदित है कि यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–1), दिल्ली की अनेक गतिविधियों को प्रस्तुत करती है। इसके साथ ही सदस्य कार्यालयों से भी निरंतर सहयोग मिल रहा है। इसी क्रम में पत्रिका के इस अंक में 'परोपकार भारतीय संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग', 'बिजली संयंत्रों में आई ओ टी की तकनीक के उपयोग' और 'आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना' आदि तकनीकी, साहित्यिक लेखों के साथ–साथ विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों द्वारा रचित लेखों का समावेश राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों की एक झलक प्रस्तुत करता है।

जैसाकि आप सभी जानते हैं कि नराकास एक ऐसा मंच है जहां पर विभिन्न प्रकृति के कार्यालय समिति सदस्य के रूप में आपस में जुड़े होते हैं। इस प्रकार नराकास के स्तर पर की जाने वाली गतिविधियों में से हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण कार्य है। पत्रिका में सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का जो अवसर प्राप्त होता है उससे हिन्दी में कार्य करने हेतु एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण होता है। पत्रिका न केवल कार्मिकों को उनके सृजनात्मक लेखन हेतु एक मंच प्रदान करती है अपितु उन्हें इस सराहनीय कार्य हेतु प्रोत्साहित भी करती है। इसी कड़ी में मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि **"इंद्रप्रस्थ स्वर"** पत्रिका के 16वें अंक में प्रकाशित रचनाओं में लेख, तकनीकी लेख, कविता, कहानी की श्रेणी में श्रेष्ठ रचना को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। इस अवसर पर सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई।

अंत में **"इंद्रप्रस्थ स्वर"** के इस अंक में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से सहयोग देने वाले सभी सदस्य कार्यालयों, उनके प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों का अभिनंदन करते हुए मैं आशा करता हूँ कि **"इंद्रप्रस्थ स्वर"** पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी सदस्य कार्यालयों से हमें रचनाएँ प्राप्त होती रहेंगी।

संजीव कुमार
संयुक्त महाप्रबन्धक (राजभाषा)
एवं सदस्य–सचिव, नराकास(उपक्रम–1) दिल्ली

गर्व

आज राहुल बहुत खुश था। सुबह सवेरे बहुत जल्दी खुद से उठकर, नहा धोकर तैयार भी हो गया था नहीं तो हमारी श्रीमती जी को उसे स्कूल के लिए तैयार करने में पसीने छूट जाते थे। श्रीमती जी भी खुश थी कि आज उन्हें राहुल को स्कूल के लिए तैयार करते समय होने वाली परेशानियों से मुक्ति मिल गई थी। आज राहुल की स्कूल में पीटीएम थी। आज उसको स्कूल यूनिफार्म के बजाय रंग बिरंगे परिधान पहनने को मिले थे। आज उसका मन खूब हिचकोले मार रहा था। राहुल मन ही मन सोच रहा था कि पीटीएम के बाद पापा को कह के कैंटीन से समोसे खाएगा, आईसक्रीम भी खाएगा और पढ़ने से छुट्टी मिलेगी सो अलग। हमारी श्रीमती जी भी बहुत समय लगाकर तैयार हो रही थी। वह तय नही कर पा रही थी कि आज वो कौन सी साड़ी पहने। रोज–रोज घर पर ही रहना होता है, कभी भी साड़ियों को पहनने का अवसर ही नही आता था। दिल की हसरत दिल में ही रह जाती थी। आज सारे अरमान पूरे करने को आतुर हो रही थी। सब अपने में मगन थे। किसी को हमारा कुछ ख्याल नही था। आखिर में हम सब स्कूल जाने के लिए घर से निकल गए। आज स्कूल बस में न जाकर राहुल अपने पापा की कार से जा रहा था। बहुत खुश हो रहा था कि आज उसे अपने सहपाठियों के ऊपर रौब जमाने का अवसर जो मिला था। सबको बताएगा कि वो आज अपने पापा की कार से स्कूल आया है। कितनी सुंदर कार है, कितना प्यारा उसका रंग है। सीट पर बैठो तो महसूस होता है कि मखमली गद्दे पर बैठे हो। इसकी हर चीज उसको बहुत प्यारी लग रही थी। धीरे–धीरे हम स्कूल के पास आ रहे थे। हमें स्कूल के पास गाड़ी खड़ी करने के लिए जगह नही मिली। जैसे–तैसे कहीं स्कूल के पास ही गाड़ी को लगाना चाहा कि स्कूल के गार्ड ने बड़े ही सख्त लहज़े में हमें वहाँ गाड़ी खड़ी न करने के लिए कहा। अब हमारे पास कोई और चारा न था बल्कि हमें अपनी गाड़ी स्कूल से काफी दूर लगानी पड़ी। राहुल का चेहरा उतर गया। दोस्तों पर गाड़ी का धौंस जमाने का मौका अपने हाथ से फिसलता हुआ उसे साफ दिख रहा था। गाड़ी पार्क करके स्कूल तक आने में राहुल के जूते जो कि आज उसने खुद से खुशी–खुशी खूब चमकाए थे, धूल से भर गए थे। गर्मी के कारण श्रीमती जी भी पसीना–पसीना हो रही थी। उसको भी हमारा गाड़ी दूर खड़ी करना अच्छा नही लगा। तब उन्होंने देखा कि ज्यादातर लोग अपने बच्चों और फैमिली को स्कूल के पास उतारकर खुद गाड़ी पार्क करके आ रहे थे। राहुल और उसकी मम्मी को हमसे गिला–शिकवा करने का अच्छा मौका मिल गया। राहुल ने कहा क्या पापा आप की वजह से मेरे जूते धूल से भर गए और मम्मी को देखो कितना पसीना आ रहा है। आपके दिमाग में इतनी सी बात नही आई कि हमें गेट के पास उतार देते। राहुल की खुशी को एक और चोट लगी जब उसने देखा कि जिन बच्चों पर वो रौब जमाने की सोच रहा था वो बच्चे उनसे भी बड़ी गाड़ी से उतर रहे थे। कितनी सुंदर, कितनी बड़ी और चमचमाती गाड़ियों से ज्यादातर बच्चे आ रहे थे। राहुल का मन रोने को हो आया। घर से चला था कितना खुश था, बालमन भी कैसा होता है। उसको अपने पापा की गाड़ी ही सबसे अच्छी है का भ्रम टूट गया था।

स्कूल गेट पर रजिस्टर में एंट्री करने के बाद वो सब स्कूल के अंदर दाखिल हुए। राहुल बड़े ध्यान से पापा को देख रहा

था जब वो उसके स्कूल के गेट रजिस्टर में एंट्री कर रहे थे। हिन्दी में अपना नाम, घर का पता, राहुल की कक्षा और अंत में अपने हस्ताक्षर भी उन्होंने हिन्दी में ही किए थे। पूरे पेज पर राहुल को अपने पापा द्वारा भरा गया डाटा ही दिख रहा था, जो कि हिन्दी में था बांकि सबने अंग्रेजी में पूरी डिटेल भरी थी। उसके पापा के द्वारा डिटेल भरने के तुरंत बाद उसकी कक्षा का ही विनोद अपने पापा–मम्मी के साथ आया और उसके पापा ने उनकी और विनोद की डिटेल गेट रजिस्टर में उनकी एंट्री के बाद भरनी शुरू की। राहुल को तो काटो खून नही। विनोद उसके पापा द्वारा हिन्दी में डिटेल भरने की बात पूरी कक्षा को बताएगा। सब उसकी हंसी उड़ाएंगे। राहुल के मन में हीन भावना घर करने लगी। पहले ही वह गाड़ी के कारण असहज था और उसपर अब यह उसके पापा द्वारा हिन्दी में डिटेल भरना। उसका मन अब पीटीएम में जाने के लिए उत्सुक नही था। वहाँ से कहीं दूर भाग जाऊ ऐसा उसके मन में बार–बार ख्याल आ रहा था। लेकिन उसके पापा और मम्मी आगे–आगे जा रहे थे। उन्होंने देखा कि राहुल पीछे छूट गया है तो उन्होंने मुड़कर राहुल को जल्दी–जल्दी आने को कहा।

राहुल की कक्षा के बाहर अभिभावकों की टीचर्स से मिलने के लिए कतार लगी थी। राहुल भी अपने पापा–मम्मी के साथ खड़ा हो गया। अब वो अपने पापा–मम्मी के साथ होकर भी उनके साथ नहीं था। वो अपने पापा–मम्मी की और बच्चों के पापा–मम्मी से तुलना करने में लग गया। विनोद के पापा ने कितनी सुंदर घड़ी पहनी है, दिनेश की मम्मी के गले का हार देखों सबसे अलग ही दिख रहा है, लाखों का तो होगा ही और एक मेरी मम्मी है कि मामूली सा काले मोतियों का हार पहन कर आई है। ओह! राधा के पापा–मम्मी भी खड़े हैं। राधा के पापा कैसे हीरो लग रहे है, काला चश्मा, क्लीन शेव, हीरो के जैसे कपड़े और राधा की मम्मी भी बिल्कुल हिरोईन लग रही हैं, कैसे कंधे तक कटे हुए बाल कितने चमक रहे हैं और मेरी मम्मी कितना बालों में तेल लगा कर आई है कि सारे बाल चिपके से लग रहे हैं। अभी जाने वो और कितने ही सहपाठियों के पापा–मम्मी से अपने पापा–मम्मी की तुलना कर देता, उससे पहले ही टीचर ने उनको बुला लिया और उन्हें थोड़ा इंतजार करने को कहा क्योंकि उनसे पहले विनोद के पापा–मम्मी अभी टीचर के साथ व्यस्त थे। राहुल ने देखा कैसे विनोद के पापा और मम्मी टीचर से अंग्रेजी में बातें कर रहे थे और साथ बैठा विनोद राहुल को देख कर मुस्करा रहा था मानों कह रहा हो कि देखो मेरे पापा–मम्मी हमारी टीचर से अंग्रेजी में बात कर रहे हैं और अब आपके पापा को देखूंगा कि कैसे बात करते हैं। फिर सोचा कि देखना क्या है उन्होंने तो गेट रजिस्टर में सारी डिटेल हिन्दी में भरी है तो यहाँ क्या खाक अंग्रेजी बोलेंगे। राहुल चाह रहा था कि जब उसके पापा–मम्मी टीचर से बातें करे तो विनोद और उसके पापा–मम्मी वहाँ से चले जाएं। जैसे ही राहुल अपने पापा–मम्मी के साथ टीचर के सामने बैठा तो टीचर विनोद से बोल बैठी कि अभी आप अपने पापा–मम्मी के साथ यहीं पास वाले बेंच पर बैठ जाए। हमसे बातचीत होने के बाद वो विनोद के पापा–मम्मी से कुछ और बात करना चाहती हैं। राहुल जो सोचे बैठा था कि यह बाहर चले जाएंगे तो कितना अच्छा होगा। उसके पापा–मम्मी ने टीचर से कैसे बात की है उसको पता नहीं चलेगा और बाद में वो उन्हें बताएगा कि उसके पापा–मम्मी ने टीचर से खूब अंग्रेजी में बात की। लेकिन यहाँ तो बिल्कुल उल्टा ही हो गया। खैर जैसे कि उसने सोचा था, बिल्कुल वैसा ही हुआ। उसके पापा–मम्मी ने टीचर को प्रणाम किया और हिन्दी में ही सारा वार्तालाप किया। राहुल ने देखा कि उसकी टीचर उसके पापा से बात करते हुए बहुत खुश लग रही थी और बातें करते–करते वो मुस्करा भी रही थी। मेरे पापा–मम्मी और टीचर बातें करते हुए बहुत सहज लग रहे थे। तभी अचानक हमारे स्कूल का चपरासी भागता हुआ आया और हमारी टीचर को बुलाया और कुछ कहा। हमारी टीचर हमारे पापा–मम्मी से क्षमा याचना करते हुए प्रिंसिपल के पास चली गई। हम वहीं बैठे रह गए। हमारे साथ–साथ विनोद भी अपने पापा–मम्मी के साथ वहीं पास के बेंच पर बैठा था। विनोद राहुल को घूर रहा था और मंद–मंद मुस्करा रहा था जैसे कि कह रहा हो कि देखो मेरे पापा कितनी अच्छी अंग्रेजी बोलते है और तुम्हारे पापा गुड मार्निंग भी नहीं बोल पाए। राहुल ने इरादा कर लिया था कि आगे से वो अपने पापा–मम्मी को बताएगा ही नहीं कि उसके स्कूल में पीटीएम है और उन्हें आना है। राहुल अभी ऐसा कुछ सोच ही रहा था कि उसकी टीचर भागी–भागी कक्षा में आई। उसके हाथ में 25–30 पेज थे। राहुल ने देखा कि उन सब पर अंग्रेजी में कुछ लिखा हुआ था। टीचर को यह ध्यान भी नहीं रहा कि हम लोग अभी भी कमरे में बैठे हैं। बस वो उन पन्नों को घूरती जा रही थी। विनोद के पापा बोल बैठे कि टीचर कोई परेशानी है तो बताएं। हम इसका समाधान खोज लेंगे। राहुल यहाँ भी अपने पापा पर खीज गया। क्या वो पहले हमारी टीचर से यह सब नहीं पूछ सकते थे। हमेशा पीछे ही रहते हैं। देखो टीचर विनोद के पापा को कितना अच्छा समझेगी और मेरे पापा, अब मैं उनकी क्या बात करूं। राहुल ने देखा कि विनोद के पापा कैसे उन अंग्रेजी के पन्नों को देख रहे थे और जैसे कह रहे हो कि मैं टीचर की समस्या का हल चुटकियों में कर दूंगा। राहुल के पापा कुछ

बोल पाते कि टीचर ने ही बोलना शुरू कर दिया। वो बहुत परेशान लग रही थी जैसे मानों उनपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा हो। उन्होंने बताया कि उनके स्कूल का उच्च अधिकारियों द्वारा आज शाम को निरीक्षण होना तय हो गया है। इसकी सूचना तो प्रिंसिपल को दो दिन पहले ही भिजवा दी गई थी। चूंकि वो छुट्टी पर थी और आज ही ज्वाईन किया था तो पता चला। प्रिंसिपल ने राहुल की टीचर को यह 25–30 पन्नों का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करने के लिए कहा। आज ही हिन्दी टीचर भी छुट्टी पर है। सो अब राहुल की टीचर तय नहीं कर पा रही हैं कि वो इसको कैसे करें। आज शाम को निरीक्षण के दौरान यह अनुवाद निरीक्षण करने वाले उच्च अधिकारियों को दिखाना है। उनके लिए स्वागत भाषण भी प्रिंसिपल की तरफ से राहुल की टीचर को ही तैयार करना है।

राहुल ने देखा कि उसकी टीचर का चेहरा उतर गया था। ऐसा लगता था कि मानों अभी रो देंगी। टीचर ने विनोद के पापा को बड़ी हसरत भरी निगाहों से देखा कि शायद वो उनकी कुछ मदद कर पाएँ क्योंकि पीटीएम के दौरान वो बहुत बड़ी–बड़ी हाँक रहे थे जिससे राहुल बहुत प्रभावित था। विनोद के पापा ने अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करने में अपनी असमर्थता जताई। राहुल के पापा बहुत बारीकी से सब देख रहे थे। विनोद के पापा टीचर से औपचारिक विदा लेकर बाहर चले गए। टीचर भूल गई कि उन्होंने तो विनोद के पापा को कुछ बताने के लिए रोका था। टीचर को कुछ समझ नहीं आ रहा था। जाने क्या सोच कर टीचर राहुल के पापा से हेल्प के लिए नहीं कह पाई। राहुल सोचने लगा कि पापा तो सिर्फ हिन्दी बोल रहे थे इसिलिए शायद टीचर सोच रही होंगी कि यह क्या अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद कर पाएंगे। अच्छा हुआ कि टीचर ने पापा को नही कहा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करने के लिए, वर्ना यहाँ भी हमें शर्मिंदा होना पड़ता। राहुल ने देखा कि उसके पापा खड़े हुए और टीचर के पास जाकर बोले कि क्या वो उन पन्नों को देख सकते हैं। राहुल सोच रहा था कि आज तो यह अपनी और हम सबकी बेइज्जती करवा कर ही रहेंगे। हिन्दी बोलने वाले क्या अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करेंगे। टीचर ने वो पन्ने राहुल के पापा को दे दिए। राहुल के पापा ने उनको ध्यान से देखा और सोचने लगे। राहुल ने मन ही मन सोचा कि क्या जरूरत थी बैठे बिठाए मुसीबत मोल लेने की। वो सोच रहा था कि उसके पापा भी अभी उसकी टीचर को इस काम के लिए मना कर देंगे। राहुल के लिए यह घोर आश्चर्य था कि उसके पापा ने उसकी टीचर को कहा कि आप चिंता न करें। बस उनको कुछ समय दे दें। टीचर की तो जैसे जान में जान आ गई। उन्होंने राहुल के पापा को एक कंप्यूटर दिलवा दिया ताकि वो उस पर अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद कर सकें। राहुल के पापा ने टीचर से पूछा कि क्या इन पन्नों पर जो भी लिखा है, वह सब भी कंप्यूटर में टाईप है या नहीं। टीचर ने बताया कि यह तो उन्हें इसी प्रकार मिला है। अब राहुल के पापा ने कंप्यूटर पर अंग्रेजी में ही टाईप करना शुरू कर दिया। राहुल, राहुल की मम्मी और टीचर सभी परेशान थे कि हमें तो इसका हिन्दी अनुवाद करना है और ये तो अंग्रेजी में ही टाईप कर रहे है। राहुल के पापा ने कहा आप चिंता न करें आपका काम हो जाएगा। टीचर ने राहुल के पापा–मम्मी एवं राहुल के लिए भी चाय और समोसे मंगवा लिए। अब राहुल बहुत खुश था कि टीचर उसके पापा को कितना मान दे रही हैं और कितनी मधुरता से बात कर रही है। राहुल के पापा को वो 25–30 पेज टाईप करने में करीब 2 घंटे लग गए। थकान उनके चेहरे पर देखी जा सकती थी फिर भी वो टीचर की मदद कर रहे थे। राहुल जो जो सोच कर आया था सब उससे उल्टा हो रहा था। आखिर राहुल के पापा ने वो सब पेज अंग्रेजी में टाईप कर दिए। टीचर और राहुल सोच रहे थे कि इसको टाईप करने में 2 घंटे लग गए और हिन्दी करने में तो ज्यादा समय लगेगा। तभी उन्होंने देखा कि उसके पापा जो अंग्रेजी में टाईप किया था उसको काला करने लगे। वो सब हैरान कि इतनी मेहनत से तो टाईप किया था और अब उसे काला कर रहे हैं। टीचर फिर से परेशान दिख रही थी। सबकी हैरानी का ठिकाना न रहा जब उसी अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी लिखा हुआ देखा। इसी प्रकार राहुल ने देखा कि उसके पापा ने सभी पन्नों को काला करके हिन्दी बना दिया। राहुल सोच रहा था कि उसके पापा तो जादूगर है। जिन 25–30 पन्नों को टाईप करने में उनको 2 घंटे लगे थे, उनको काला जादू करके राहुल के पापा ने 15–20 मिनट के अंदर हिन्दी का कर दिया था। राहुल की टीचर की तो खुशी का कोई ठिकाना न था। राहुल के पापा ने सभी पन्नों का प्रिंट निकाल कर टीचर को दे दिया तथा कहा कि वो एक बार सब को ध्यान से पढ़ लें तथा कोई त्रुटि होने पर उनको बता दें। टीचर जितना हिन्दी अनुवाद को पढ़ती जा रही थी उतनी ही हैरान भी होती जा रही थी कि राहुल के पापा ने यह जादू कैसे कर दिया। राहुल के पापा ने टीचर से कहा कि वो निरीक्षण में आने वाले उच्च अधिकारियों के नाम भी बता दें ताकि वो उनको उनके लिए स्वागत भाषण भी बना कर दे दें। राहुल के पापा अभी स्वागत भाषण बना ही रहे थे कि टीचर जल्दी से कमरे से बाहर चली गई। थोड़ी देर बाद टीचर वापिस आई तो उनके साथ राहुल के स्कूल की प्रिंसिपल भी थी तथा कुछ और टीचर्स भी थी। राहुल के पापा ने उनके लिए स्वागत भाषण भी तैयार कर दिया था।

सभी ने राहुल के पापा का तालियों से स्वागत किया तथा प्रिंसिपल ने सभी के सामने राहुल के पापा की तारीफ की तथा आभार व्यक्त किया और उनके द्वारा किए गए इस सहयोग को अमूल्य बताया। फिर उन्होंने पूछा कि उन्होंने अंग्रेजी से हिन्दी कैसे किया। राहुल के पापा ने बताया कि यह उन्होंने गूगल ट्रांसलेट की मदद से किया। उनके अनुरोध करने पर राहुल के पापा ने सबको इसकी जानकारी दी। उन्होंने राहुल के पापा से वायदा लिया कि वो एक दिन अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद पर उनके स्कूल में सभी टीचर्स के लिए एक सत्र लें जिसे राहुल के पापा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। अब राहुल अपने पापा–मम्मी के साथ घर वापिस आ गया। अब राहुल को सभी टीचर्स और बच्चे बहुत प्यार देने लगे। प्रिंसिपल भी राहुल से उसके पापा के बारे में पूछती रहती थी।

समय बीतता गया। फिर से स्कूल में पीटीएम थी। आज राहुल को कार का भी लालच नहीं था, जूते चमकाने की भी जरूरत महसूस नहीं की उसने। राहुल की मम्मी भी बहुत उत्सुक नहीं थी कि कोई अच्छी सी साड़ी पहने क्योंकि गाड़ी तो दूर ही खड़ी करनी पड़ेगी, राहुल के जूते धूल से भर जाएंगे और राहुल की मम्मी पसीने से तर–बतर हो जाएंगी। फिर भी वो सब तैयार होकर स्कूल को गए। जैसे ही वो लोग स्कूल के गेट तक पहूंचे तो स्कूल के गार्ड ने उसके पापा को सैल्यूट किया और कहा कि वो अपनी कार को स्कूल के गेट के पास ही खड़ी करें। स्कूल की प्रिंसिपल ने उनके लिए कार पार्किंग की जगह खाली रखने के लिए कहा था। गाड़ी पार्क करके जैसे ही वो लोग गेट के अंदर आए तो स्कूल की प्रिंसिपल और सारा स्टाफ उनके स्वागत के लिए खड़ा था। उनके लिए स्कूल बैंड तैयार था। उनपर फूलों की बरसात की गई और फूलमालाओं से उनका स्वागत किया गया। स्कूल बैंड ने बैंड बजाकर उनका स्वागत किया। स्कूल की प्रिंसिपल उनको एक हाल में ले गई जहाँ स्कूल के सारे छात्र एवं शिक्षक मौजूद थे। राहुल के पापा–मम्मी को चीफ गेस्ट की तरह ऊपर स्टेज पर ले जाया गया। जहाँ फिर से उनका स्वागत किया गया। प्रिंसिपल ने वहाँ मौजूद सभी को राहुल के पापा के द्वारा पिछले पीटीएम के दौरान की गई सहायता के बारे में बताया। सभी ने तालियाँ बजाकर अपना आभार व्यक्त किया। प्रिंसिपल ने बताया कि उसी मदद के कारण उनके स्कूल को बेस्ट स्कूल ऑफ द ईयर का खिताब दिया गया है और पूरे शहर के 50 स्कूलों में से उनके स्कूल को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है क्योंकि उच्च अधिकारियों ने वही 25–30 पेज सभी स्कूलों को दिए थे अनुवाद के लिए। सबसे सही और अच्छा अनुवाद उन्हीं के स्कूल का था। तब उन्होंने राहुल के पापा से अनुरोध किया कि वो अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद पर सबके लिए सत्र लें जिसकी व्यवस्था उन्होंने इसी हाल में कर रखी है। एक तरफ बड़ी सी स्क्रीन लगी थी जिसे एक कंप्यूटर से जोड़ा गया था। राहुल के पापा आज अपने साथ एक पैन ड्राईव लाए थे जिसे उन्होने कंप्यूटर से जोड़ दिया तथा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद पर सत्र लेना शुरू किया और तभी राहुल ने देखा कि स्क्रीन पर ई–टूल्स लिखा हुआ आया जो कि उसके पापा कंप्यूटर के द्वारा भेज रहे थे। राहुल के पापा बहुत अच्छी अंग्रेजी भी बोल रहे थे और हिन्दी अनुवाद भी बता रहे थे। राहुल ने पापा को इतनी अच्छी अंग्रेजी बोलते आज पहली बार सुना था। ऐसा राहुल ने पहले कभी नही देखा था कि कंप्यूटर से स्क्रीन पर भी कुछ भेजा जा सकता है। राहुल के पापा ने वहाँ उपस्थित सभी को ई–टूल्स के महत्व के बारे में बताया और विभिन्न प्रकार के ई–टूल्स के बारे में जानकारी भी दी। उन्होंने हिन्दी में बोलकर उसे स्क्रीन पर उभरता हुआ भी दिखाया। यह हिन्दी में बोलकर टाईप करना था। उसी प्रकार उन्होंने अंग्रेजी में Namaste लिखा जो कि हिन्दी का नमस्ते बन गया। सभी यह जानकर बहुत हैरान थे कि ऐसा भी हो जाता है। अंत में प्रिसिंपल ने राहुल के पापा का मंच पर उपहार देकर स्वागत किया। उसके बाद सभी पीटीएम के लिए चले गए। पीटीएम के दौरान राहुल की टीचर तो बहुत ही खुश थी क्योंकि उन्होंने बताया कि प्रिसिंपल ने उनको पदोन्नति दी है और यह सब राहुल के पापा के कारण था।

आज पीटीएम से आते हुए राहुल बहुत गर्व महसूस कर रहा था क्योंकि उसके पापा आज उसके लिए सबसे बड़े हीरो थे। पूरे हाल में सब उसके पापा को ही देख रहे थे। कितने ध्यान से उनके सत्र को सुन रहे थे और उनके द्वारा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद के नए–नए तरीके देख कर अचंभित हो रहे थे। आज राहुल को उनके अंग्रेजी के बजाय हिन्दी में बात करना ज्यादा अच्छा लग रहा था। राहुल को समझ आ गया था कि मातृभाषा ही सबसे अच्छी भाषा है। उसने भी सोच लिया था कि अब वो अनावश्यक ही अंग्रेजी नहीं बोलेगा क्योंकि वो अंग्रेजी को सिर्फ रौब डालने वाली भाषा समझता था जो कि आज उसका मिथ्या दूर हो गया था। आज वो बड़े गर्व के साथ अपना सीना चौड़ा किए अपने पापा–मम्मी के साथ घर को वापिस जा रहा था।

je"k pn
मुख्य प्रबंधक – राजभाषा
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
उत्तरी अंचल, नई दिल्ली

आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना

बचपन से आत्मनिर्भरता का मतलब स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने तक ही सीमित रहा है। हमने कभी सोचा न था कि निजी स्वार्थ से ऊपर भी देश का आत्मनिर्भर होना कितना जरुरी है। सदियों से दूसरे देशों के रहमोकरम पर निर्भर भारत पहली बार भारत सरकार के असीम प्रयासों से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहा है, यह हर देशवासी के लिए गर्व की बात है।

fo'o dh çkphu lL—fr;k e Hkkjr n'k dh lL—fr vf}rh; jgh g] इसीलिए भारत संस्कृति के क्षेत्र में पहले से ही काफी आत्मनिर्भर है। स्वयं की काबिलियत और हुनर से स्वयं का विकास करना ही आत्मनिर्भरता है। हर देश और उसका नागरिक यही चाहता है कि वह संस्कृति, संसाधन, खान–पान और रहन–सहन के तौर तरीके से आत्मनिर्भर बने, यह आज के समय की जरुरत भी है।

भारत के विकास की जड़ें अगर मजबूत करनी है तो हमें पहले आत्मनिर्भर बनना पड़ेगा तभी हमारा भारत विकासशील से विकसित देश बनेगा। इस अभियान के तहत जरूरी व आवश्यक चीजों का निर्माण हमारे देश में ही किया जाए, हम दूसरे देशों के दया पर निर्भर ना रहे, तभी हमारा देश आत्मनिर्भर भारत कहलाएगा।

vkRefuHkj Hkkjr dk liuk %

देश की स्वतंत्रता के बाद से ही भारत आत्मनिर्भर बनने का सपना देख रहा है। भारत की आजादी की लड़ाई में महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया सविनय अवज्ञा आंदोलन, जिसमें उन्होंने लोगों से विदेशी वस्तुओं पर निर्भर न रहकर भारत में बनी वस्तुओं पर निर्भर रहने की अपील की थी। इस आंदोलन के तहत लोगों ने विदेशी कपड़े पहनने बंद कर दिए थे और अपने हाथ से बुने हुए कपड़े पहने थे। महात्मा गांधी स्वयं भी स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करते थे, और महात्मा गांधी ही ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने आत्मनिर्भर भारत की तरफ पहला कदम उठाया था। Hkkjr dk igyh vkRefuHkj cuu dh çj.kk egkRek xk/kh d mlh lfou; voKk vknkyu l gh feyh FkhA

परंतु दुख की बात यह है कि आजादी के 75 साल बाद भी भारत में इस सपने को साकार करने के लिए किसी सरकार या सामाजिक संस्थान ने कोई सार्थक कदम नहीं उठाया है।

देश मे कोरोना महामारी की वजह से देश को कई आर्थिक समस्याओं का भी सामना करना पड़ा है। कोरोना महामारी के दौरान भारतीय नागरिकों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से हमारे ekuuh; ç/kkue=h Jh ujUæ eknh thu ^vkRefuHkj Hkkjr vfHk;ku* dh ?kk"k.kk dhA उनका मानना है की अगर देश का सर्वांगीण विकास चाहते है तो सबसे पहले देश को खुद के पैरों पर खड़ा करना होगा। प्रधानमंत्री जी चाहते है कि छोटी से छोटी चीजों का निर्माण देश के भीतर ही हो ताकि हमें विदेशी चीजों पर निर्भर नहीं रहना पड़े और देश के नागरिकों की आमदनी भी हो सकेगी। तभी आत्मनिर्भर भारत का जो सपना भारत की आजादी के पहले गांधीजी ने भी देखा था, वह साकार हो सकेगा।

'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की घोषणा माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 12 मई 2020 को एक नई सोच के साथ की गई। कोविड के कारण उपजी परिस्थितियों के बाद देश के नागरिकों का सशक्तीकरण करने की आवश्यकता महसूस की गई, ताकि वे देश से जुड़ी समस्याओं का समाधान हो सके तथा बेहतर भारत का निर्माण करने में अपना योगदान दे सकें। आत्मनिर्भर भारत अभियान के समक्ष अनेक चुनौतियों के होने के बावजूद, भारत को औद्योगिक क्षेत्र में मजबूती के लिए उन उद्यमों में निवेश करने की आवश्यकता है जिनमें भारत के वैश्विक ताकत के रूप में उभरने की संभावना है। कोविड –19 महामारी के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए माननीय प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा विस्तृत राहत पैकेज की घोषणाएं की गईं।

इस दिशा में कार्य करते हुए भारत सरकार ने ^vkRefuHkj Hkkjr vfHk;ku* d vrxr 20 yk[k djkM #i, d fo'k"k vkfFkd और व्यापक पैकेज की घोषणा की। इस आत्मनिर्भर राहत पैकेज के माध्यम से न केवल सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों क्षेत्र में सुधारों को प्राथमिकता दी गई साथ ही दीर्घकालिक सुधारों के लिए कोयला और खनन जैसे क्षेत्रों को शामिल किया गया ताकि आत्मनिर्भर भारत अभियान के समक्ष अनेक चुनौतियों के होने के बावजूद, भारत को औद्योगिक क्षेत्र में मजबूती मिले और भारत वैश्विक ताकत के रूप में उभरे।

vkRefuHkj Hkkjr dh pukfr;k vkj Hkfo"; dh lHkkouk%

आत्मनिर्भर भारत अभियान 'मेक इन इंडिया' का नया संस्करण ही है। वर्तमान सरकार ने पहली बार आम नागरिक को इस दिशा मे पहल करने के लिए प्रेरित किया है भारत सरकार स्वयं भी ऐसे कदम उठा रही है जो भारत को जल्दी ही सभी क्षेत्रों मे आत्मनिर्भर बनाएगा।

वर्तमान भारत सरकार ने आत्मनिर्भरता के लिए जिन क्षेत्रों को प्राथमिकता दी है उनमें शिक्षा, तकनीकी, चिकित्सा, विज्ञान, आधारभूत संरचना, प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर हर घर या नागरिक को उनकी जरूरत के अनुसार खाना–पानी, कपड़ा, मकान और काम देना निर्धारित किया है। इसका सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था पर होगा और यह भारत की आत्मनिर्भरता के लिये अति आवश्यक है। इसका उद्देश्य अन्य देशों के खिलाफ संरक्षणवाद को अपनाना नहीं है। जिन क्षेत्रों में एफडीआई और विदेशी प्रौद्योगिकी की आवश्यकता है, उनका देश ने हमेशा स्वागत ही किया है।

आज भी हम संसाधन होते हुए भी अपनी जरूरत के लिए अन्य पड़ोसी देशों से कच्चा माल और जीविका के लिए जरुरी कई सामान आयात करते हैं। कुछ मामलों में तो हमारे देश का कच्चा माल विदेशो में भेजा जाता है और फिर वहां से यही सामान तैयार होकर निर्यात के रूप मे भारत आता है। भारत सरकार जल्दी ऐसे कदम उठा रही है जिससे भारत में ही अधिकतर उपयोगी वस्तुओं का उत्पादन हो सके, जिससे रोजगार का सृजन होगा और जल्दी ही सभी क्षेत्रो में हम आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

हमारा भारत देश एक बड़ा और हर संसाधन से परिपूर्ण देश है। भारत हर प्रकार की वस्तु या सामग्री का निर्माण खुद कर सकता है चाहे वो छोटी से छोटी सुई और बड़ी से बड़ी वस्तु ही क्यों न हो। इसके लिए किसी दूसरे देश पर आश्रित रहने की जरूरत नहीं रहेगी। यदि इन संसाधन का सही उपयोग करके देश में ही वस्तुएं बननी शुरू हो तो इससे देश में उद्योगों की बढ़ोतरी होगी और देश के हर युवा को रोजगार मिलेगा और देश के नागरिकों को पर्याप्त मात्रा में आवश्यक संसाधन व सामान मिलेगा। ऐसा करने के लिए देश के हर युवा के लिए इच्छाशक्ति और कार्य में कुशलता होनी बहुत जरूरी है। ऐसा नहीं है कि हमारे देश में सक्षम लोगों की कमी है, हमारे देश में ऐसे कई लोग हैं जो देश के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

जब देश के पास पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं होंगे तो उन संसाधनों की जरूरत पूरा करने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ेगा। हालांकि इन संसाधनों के निर्माण की सारी सामग्री देश में ही उपलब्ध होगी तो उसका प्रयोग करके इन संसाधनों का निर्माण देश में ही किया जा सकता है। इससे देश आत्मनिर्भर भी बनेगा और किसी दूसरे देश पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं रहेगी।

आत्मनिर्भर भारत को लेकर अब सरकार भी बहुत अच्छे–अच्छे कदम उठा रही है। इस योजना में भारत को हर उस क्षेत्र में सक्षम होना है, जिसमें वह दूसरे देशों की मदद लेता है। आत्मनिर्भर भारत अभियान का उद्देश्य भारत के संसाधनों का उपयोग भारत में ही करना है। भारत में अधिक उद्योगों को सुचारू करना और यहां के हर युवा को रोजगार के लिए अग्रेसित करना और आत्मनिर्भर बनाना है। हमें भी सरकार का पूरा सहयोग करना चाहिए और देश को आत्मनिर्भर बनाने में सरकार की मदद करनी चाहिए।

Hkkjr vkRefuHkZj gksxk rks blds dbZ lkjs Qk;ns gksaxs tSls%

- भारत को आवश्यक वस्तुओं की जरूरत को पूरा करने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।
- हमारे देश में उद्योगों में बढ़ोतरी होगी।
- हमारे देश का हर युवा सफल, सक्षम और आत्मनिर्भर होगा और साथ ही उसके पास रोजगार होगा। इससे बेरोजगारी में कमी आएगी और गरीबी से भी मुक्ति मिलेगी।
- भारत में संपन्नता होगी और देश का आर्थिक ढ़ांचा मजबूत होगा।
- यदि देश आत्मनिर्भर होगा तो किसी भी प्राकृतिक आपदा से लड़ने मे देश सक्षम होगा और फिर किसी दूसरे देश पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं होगी।
- अगर भारत आत्मनिर्भर होगा तो भारत मे हमारे दैनिक

जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं का आयात जो अन्य पड़ोसी देशों से किया जाता है उसे भारत स्वयं ऐसी वस्तुओं का निर्माण करने लगेगा।

- भारत के आत्मनिर्भर बनने से भारत मे कई तरह की वस्तुओं का निर्माण होगा और भारत मे उद्योग भी बढ़ेंगे। भारत उन वस्तुओं को विदेश में निर्यात भी कर सकेगा और इससे भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। साथ ही भारत में रोजगार के अवसर बढ़ने के साथ–साथ इससे कुशल और सक्षम लोगों को रोजगार भी मिलेगा। इससे देश में गरीबी भी कम हो सकेगी।
- भारत के आत्मनिर्भर बनने से पहले देश अब तक जिन वस्तुओं का आयात करता था उसका अब भारत करेगा निर्यात, इससे देश मे विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ेगा।

Hkkjr ljdkj dh ^vkRefuHkZj Hkkjr vfHk;ku* dh igy%

भारत सरकार ने 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की शुरुआत 12 मई 2020 से शुरू की। इसे चरणबद्ध तरीके से लागू करने के लिए आत्मनिर्भर 1.0, 2.0 और 3.0 नाम दिया गया। कोरोना महामारी के समय माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी ने देश के लिए सहायता के रूप में 20 लाख करोड़ रूपये के आर्थिक पैकेज को अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा, तकनीकी व्यवस्था, जीवंत जनसांख्यिकी और मांग की पूर्ति के उपयोग के लिए निर्धारित किया गया।

इस योजना का उद्देश्य लोगो की आत्मनिर्भरता को बढ़ाना है। ताकि भारत का हर व्यक्ति इस मुश्किल समय में एक दूसरे का सहारा बने। कोविड–19 के चलते छोटे उद्योगों, मजदूर, किसानों और श्रमिकों को बहुत नुकसान झेलना पड़ा। इस योजना के अंतर्गत सरकार द्वारा चुने गए सभी लाभार्थियों को आर्थिक सहायता दी जाएगी। जिससे की सभी लोगो की मदद की जाए। केंद्र सरकार ने इस योजना में लाभ जन–जन तक पहुँचे इसकी व्यवस्था की है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत मुख्य रूप से किसानों की आय स्तर को ऊँचा करने के लिए एवं महिला सशक्तिकरण सुशासन और अन्य सभी विकास के कार्यों पर बल दिया जा रहा है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान' को दो चरणों में लागू किया जा रहा है। पहले चरण में चिकित्सा, वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक, प्लास्टिक, खिलौने जैसे क्षेत्रों को प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि स्थानीय विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके। दूसरा चरण में फर्नीचर, फूट वेयर और एयर कंडीशनर, पूंजीगत सामान तथा मशीनरी, मोबाइल एवं इलेक्ट्रॉनिक, रत्न एवं आभूषण, फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल आदि शामिल हैं।

क्षेत्रवार जरूरतों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक क्षेत्र में कृषि क्षेत्र, खनन क्षेत्र, मत्स्य पालन क्षेत्र को शामिल किया है। द्वितीयक क्षेत्र में निर्माण क्षेत्र, विनिर्माण और उपयोगिताएँ, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME), कुटीर उद्योग आदि रखे गए है। सेवा/तृतीयक क्षेत्र मे खुदरा, पर्यटन, बैंकिंग, रियल एस्टेट, मनोरंजन, संचार, आतिथ्य और अवकाश, आईटी सेवाएं आदि और चतुष्कोणीय क्षेत्र में सार्वजनिक क्षेत्र, शिक्षा, अनुसंधान और विकास को प्राथमिकता दी गई है।

^vkRefuHkZj Hkkjr vfHk;ku* ;kstuk 1-0 ds varxZr tks ;kstuk,a py jgh gS os gS%

- वन नेशन वन राशन कार्ड
- किसान क्रेडिट कार्ड योजना
- ईसीएलजीएस 1.0
- इमरजेंसी वर्किंग कैपिटल फंडिंग
- स्पेशल लिक्विडिटी स्कीम फॉर एनबीएफसी/एचएफसी
- लिक्विडिटी इंजेक्शन फॉर डिस्कम्स
- प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना

^vkRefuHkZj Hkkjr vfHk;ku* ;kstuk 2-0 ds varxZr tks ;kstuk,a 'kkfey gSa] os gS%

- एलटीसी कैश वाउचर स्कीम
- फेस्टीवल एडवांस
- पार्शियल क्रेडिट गारंटी स्कीम 2.0
- एडिशनल केपिटल एक्सपेंडिचर

^vkRefuHkZj Hkkjr vfHk;ku* ;kstuk 3-0 dks 2022 esa ykap fd;k] blds varxZr tks ;kstuk,a py jgh gSa os gS%

- हाउसिंग फॉर ऑल (शहरी) (रु 18000 करोड़)
- बूस्ट फॉर रूरल एंप्लॉयमेंट (रु 10 हजार करोड़)
- R&D ग्रांट फॉर COVID सुरक्षा–इंडियन वैक्सीन डेवलपमेंट (रु 900 करोड़)
- इंडस्ट्रियल इंफ्रास्ट्रक्चर, इंडस्ट्रियल इंसेंटिव एंड डोमेस्टिक डिफेंस इक्विपमेंट (रु 10200 करोड़)

- बूस्ट फॉर प्रोजेक्ट एक्सपोर्ट (रु 3000 करोड़)
- बूस्ट फॉर आत्मनिर्भर मैन्युफैक्चरिंग (रु 1,45,980 करोड)
- सपोर्ट फॉर एग्रीकल्चर (रु 65 हजार करोड़)
- बूस्ट फॉर इंफ्रास्ट्रक्चर (रु 6000 करोड़)
- आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना (रु 6000)

भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत भारत के हर वर्ग के नागरिको को लाभार्थी बनने का संकल्प लिया है ताकि जल्दी ही भारत के किसान, गरीब नागरिक, काश्तकार, प्रवासी मजदूर, कुटीर, गृह उद्योग, मध्यमवर्गीय और लघु उद्योग में काम करने वाले नागरिक, मछुआरे, पशुपालक और संगठित क्षेत्र व असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्ति सक्षम और आत्मनिर्भर बना सके। आर्थिक राहत पैकेज में गरीब मजदूर, कर्मचारियों के साथ ही होटल तथा इंडस्ट्री से जुड़े लोगों को फायदा होगा।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज द्वारा रु 1,92,800 करोड़ रुपए; प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज अन्न योजना द्वारा रु 82,911 करोड़ रुपए; आत्मनिर्भर भारत अभियान 1.0 द्वारा रु 11,02,650 करोड़ रुपए; आत्मनिर्भर भारत अभियान 2.0 द्वारा रु 73,000 करोड़ रुपए; अर्जुन निर्मल भारत अभियान 3.0 में रु 2,65,080 करोड़ रुपए व्यय किए/करने का लक्ष्य है।

आत्मनिर्भर भारत अभियान राहत पैकेज के अंतर्गत जिन महत्वपूर्ण क्षेत्रों को शामिल किया गया है वे हैं:

- मेक इन इंडिया
- निवेश को प्रेरित करना
- सरल और स्पष्ट नियम कानून
- नए व्यवसाय को प्रेरित करना
- उत्तम आधारिक संरचना
- समर्थ और संकल्पित मानवाधिकार
- बेहतर वित्तीय सेवा
- कृषि प्रणाली

कुछ सरकारी योजना जिन्होंने सभी वर्ग के नागरिको का ध्यान रखा गया वे हैं–

- प्रधानमंत्री आवास योजना
- प्रधानमंत्री जन–धन योजना (पीएमजेडीवाई)
- जन–धन से जन सुरक्षा
- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई)
- प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई)
- अटल पेंशन योजना (एपीवाई)
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
- स्टैंड अप इंडिया योजना
- प्रधानमंत्री वय वन्दना योजना

(संदर्भ – प्रस्तुत आंकड़े और विस्तृत जानकारी भारत सरकार की अधिकृत वेब साइट से)

ये सभी योजनाएं भारत को आत्मनिर्भर बनाने मे मदद कर रही हैं। आत्मानिर्भर भारत अभियान एक दीर्घकालिक अवधारणा है, अल्पावधि में यह हासिल करना मुश्किल है।

वर्तमान की भारत की अर्थव्यवस्था एक मिश्रित प्रकार की अर्थव्यवस्था है जिसमें परिवर्तन किया जाना संभव है। अर्थव्यवस्था ही एक ऐसा साधन है जो भारत को आत्मनिर्भर बनने की और मोड़ सकता है। भारत की तकनीक काफी विकसित है और इसी तकनीक के चलते भारत विश्व शक्ति बनने का साहस रखता है। भारत की तकनीकी इसी का एक मुख्य अंग है जो भारत को आत्मनिर्भर बनाएगा। भारत की आधारभूत संरचना इतनी मजबूत है की यह भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए मदद करेगा। भारत में कच्चे माल की मांग इतनी ज्यादा बढ़ रही है की हमें पड़ोसी देश पर निर्भर रहना पड़ता है। अगर हम कच्चे माल का निर्माण भारत मे करते है तो उस स्थिति मे भारत आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो सकेगा।

भारत की जनसंख्या भी जंगल में आग की तरह फैल रही है, इस पर नियंत्रण भी जरूरी है। अगर भारत आत्मनिर्भर बनता है तो उस स्थिति में भारत को कई तरह के फायदे होंगे जो भारत को एक नई पहचान दिलाने में मदद करेंगे।

vkRefuHkj Hkkjr vfHk;ku e vke ukxfjd dh ftEenkjh%

भारत में संसाधन उपलब्ध है और हर प्रकार की वस्तु या सामग्री का निर्माण हम खुद कर सकते हैं। सरकार के प्रयास के साथ साथ हर नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि

वे भी देश को आत्मनिर्भर बनाने में अपना अपना योगदान दें। देश के हर युवा मे इच्छाशक्ति और कार्यकुशलता होनी बहुत जरूरी है। हमारे देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, ये देश के लिए कुछ भी कर सकते हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने की बहुत बड़ी क्षमता है लेकिन इसके लिए सरकार द्वारा बनाए गए कानूनों के उचित कार्यान्वयन और सरकार द्वारा आवंटित धन के उचित आवंटन की आवश्यकता है। न केवल शहरी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में भी विकास की सर्वोत्कृष्ट क्षमता है यदि उचित नीतियां बनाई और लागू की जाती हैं। सरकार को उन क्षेत्रों को विकसित करने के लिए सभी सुविधाएं देनी चाहिए जिनमें अभिनव कदम उठाने की क्षमता है। यह न केवल सरकार की जिम्मेदारी है बल्कि उपभोक्ताओं की जिम्मेदारी भी है। घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुओं का उपभोग करने के लिए मांग किसी भी क्षेत्र के विकास के लिए मुख्य निर्धारक है। भारत न केवल बुनियादी उत्पादों का उत्पादन करने में सक्षम है बल्कि उच्च तकनीकी उत्पादों का उत्पादन करने की क्षमता भी रखता है।

कुछ उपायों को अपनाकर अभियान के उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है। चूंकि सरकार ने कई क्षेत्रों और योजनाओं के विकास के लिए बड़ी राशि आवंटित की है, लेकिन उचित आवंटन वास्तविक हाथों तक पहुंचना चाहिए। गरीब आबादी प्राकृतिक आपदाओं और महामारी से बुरी तरह प्रभावित होती है। इसलिए देश को प्राकृतिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। किसी भी विचार और नीति की सफलता उस नीति के कार्यान्वयन के लिए सुशासन और उपयुक्त तंत्र पर निर्भर करती है। आत्मनिर्भर और वैश्विक आपूर्तिकर्ता बनने के लिए जरूरत से ज्यादा उत्पादन करना भी आवश्यक है।

भारत में हर संसाधन उपलब्ध है लेकिन वर्तमान जनसंख्या के लिए यह नाकाफी है। हमें देश की जनसंख्या वृद्धि को रोकना ही होगा, क्योंकि जो संसाधन हम तैयार कर रहे हे वो असीमित जनसंख्या के लिए नहीं हो सकता। जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए सभी को उचित शिक्षा ही एकमात्र साधन है। नई शिक्षा नीति और इसके सही कार्यान्वयन से जनता मे जागरूकता आएगी और वह जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभावों को समझेगी। सरकार भी इस दिशा में गंभीरता से कार्य कर रही है।

नए स्टार्टअप और आत्मनिर्भरता के लिए संसाधन जुटाने का कार्य सरकार ने शुरू किया है ताकि नए उद्यमी को भारत मे उद्योग चलाने और घरेलु स्तर पर रोजगार का सृजन कर सकें।

भारत को आत्मनिर्भर होने के लिए कुछ क्षेत्रों में बहुत कार्य करने की जरूरत है। गरीब देश से विकसित देश की ओर आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और फिर जल्दी ही विकाशसील देश की परिकल्पना को साकार करने के लिए सरकार के साथ हर नागरिक को अपनी–अपनी जिम्मेदारी निभानी ही होगी।

कहते है जब कोई परेशानी आती है तो हम स्वयं ही उसका हल ढूंढने की कोशिश करते हैं। इसी तरह जब विश्व में कोरोना महामारी ने कहर ढाया तो देश को भी स्वयं ही इससे लड़ने और भारत को आर्थिक रुप से सक्षम बनाने के लिये संकल्प करना पड़ा। देश को आत्मनिर्भर बनाने की परिकल्पना को पुनः जीवित किया गया। सरकार के साथ देश के हर नागरिक की भागीदारी में सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास आत्मनिर्भरता की ओर सार्थक कदम है।

भारत ने आत्मनिर्भर बनने का सपना एक बार फिर देखा है और सही मायने में आत्मनिर्भरता का सही मतलब समझा। बरसों से भारत के दिल मे बसा आत्मनिर्भर बनने का सपना अब साकार होने लगा है। अब वर्तमान में सरकार और देश के नागरिकों का यह अभियान वर्षों पुराने सपने को साकार करेगा और भारत बनेगा आत्मनिर्भर।

idt JhokLro
महाप्रबंधक (विद्युत)
मेकॉन लिमिटेड, दिल्ली

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 54वीं बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 54वीं बैठक का आयोजन 28.01.2022 को वर्चुअल माध्यम से किया गया। बैठक की अध्यक्षता कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सुनील दत्त, कार्यपालक निदेशक (प्रशासन) द्वारा की गई। बैठक में राजभाषा विभाग, भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में श्री एन के मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) भी उपस्थित थे। बैठक में कुल 45 सदस्य कार्यालय उपस्थित हुए। इस बैठक में सदस्य कार्यालयों से प्राप्त जुलाई, 2021 से दिसंबर, 2021 तक की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा श्री एन के मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) द्वारा की गई। बैठक के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पत्रिका ÞbæçLFk Lojß के 16वें अंक का विमोचन किया गया साथ ही सदस्य कार्यालयों द्वारा जनवरी से दिसंबर, 2021 के दौरान प्रकाशित पत्रिकाओं के आधार पर चार गृह पत्रिकाओं को श्रेष्ठ गृह पत्रिका पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके लिए सदस्य कार्यालयों को पुरस्कार के रूप में राजभाषा शील्ड एवं प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया।

खुशी

कल रात कुछ अजब बात हुई सपने में मेरी भगवान से मुलाकात हुई

मैने पूछा उनसे आजकल सब इतने परेशान क्यों हैं, सब एक दूसरे से इतने बदगुमान क्यों हैं।

उन्होंने मुस्कुराकर कहा आजकल लोग मुझसे मिलते कब हैं, एक अंधी भाग दौड़ में व्यस्त सब हैं।

आदमी आदमी को कुछ समझता कहाँ है। मैं, मैं और मैं की आवाज़ से गुंजायमान सारा जहां है।

मैने जिद्द की कि हल इन मुश्किलों का बताओ कोई।

भगवान बोले बनावट का मुखौटा उतारना होगा, ''मैं'' को जीवन से त्यागना होगा।

सब मुझे मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे में ढूंढ रहे हैं।

पर मत ढूंढों मुझे किसी मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे में। मुझसे मिलने का मन हो तो किसी दुखी की मदद कर देना और जीवन में सबको साथ लेकर चलना।

आँख खुली तो सच मैंने ये जाना कि खुश रहना है तो सबकी ओर मदद का हाथ बढ़ाना।

¼j tuh o/kkou½
वरिष्ठ अधीक्षक (मानव संसाधन)
सफदरजंग हवाईअड्डा

मेरी तीर्थ यात्रा

ईश्वर के प्रति आस्था रखना स्वाभाविक है। अन्य धार्मिक मनुष्यों की तरह मेरी भी यह चेष्टा रहती है कि प्रत्येक शुभ अवसर पर मंदिर, गुरूद्वारा या कोई भी देवस्थल हो वहां पर मैं भी अपने ईष्ट का शुक्रिया अदा करने जाउं। इसी आस्था के वशीभूत, कॉनकॉर में नियुक्ति पश्चात और वायुसेना बैंगलोर से सेवानिवृत होने पर दक्षिण भारत के मंदिरों जैसे रामेश्वरम, धनुषकोडी, तिरूपति, मदुरै आदि के दर्शन का भाव मेरे मन में आया। एयरफोर्स और बैंगलोर को फाईनल बाय–बाय करने से पहले परम आराध्य ईश्वर के मंदिर दर्शनों की मेरी इच्छा बलवती हो उठी।

इस कार्य को अमली जामा पहनाने के लिए जब मैने वायुसेना के अपने दोस्त से जिक्र किया तो उसने स्वयं भी अपने परिवार और बच्चों सहित तीर्थ यात्रा पर चलने की तुरंत ही हामी भर दी। इसके साथ ही उसने 2 परिवार के लिए 7 दिनों के लिए सारी व्यवस्थाएं जैसे कि ट्रेन रिर्जवेशन, रिर्टन रिर्जेवेशन, होलीडे होम बुकिंग, मंदिर दर्शन की बुकिंग आदि उसने स्वयं ही करा दी। प्रोग्राम के अनुसार सबसे पहले हम तमिलनाडू के मदुरै में स्थित मीनाक्षी मंदिर दर्शन के लिए ट्रेन से रवाना हुए। हम ग्रुप में कुल 8 सदस्य थे और 4 बैग बड़े और 2 हैंड बैग हमारे पास थे।

रेलसफर के दौरान ही मैंने सहयात्रियों से मंदिर के बारे में थोड़ी से जानकारी मिली कि यह मंदिर देवी पार्वती को समर्पित है। उनके अनुसार मलयराज की एक पुत्री थी जिसका नाम मीनाक्षी था। मीनाक्षी को माँ पार्वती का अवतार माना गया था। मीनाक्षी से विवाह करने के लिए भगवान शिव स्वयं पृथ्वी पर आएं थे। राजकुमारी मीनाक्षी की आँखे मछली के समान थी। मीन अर्थात मछली के समान आँखे वाली होने के कारण उन्हें मीनाक्षी कहा गया। इसीलिए इस मंदिर का नाम मीनाक्षी मंदिर रखा गया। मंदिर के दर्शन करने दूर–दूर से दर्शानार्थी आते है और उनकी मुरादें अवश्य ही पूरी होती है। मंदिर के बारे में इसी तरह की चर्चा सहयात्रियों से होती गई और मै भी अपनी इच्छाएं जो मीनाक्षी मंदिर में देवी को प्रस्तुत करनी थी, उन पर सिलसिलेवार विचार करने लगा। सह यात्रियों ने ये भी बताया कि ट्रेन से उतर कर मंदिर के लिए जल्दी लाईन में लग जाना ताकि जल्दी दर्शन हो सके अन्यथा मंदिर बंद हो जाने पर दूसरी पारी यानी दोपहर बाद दर्शन हो पांएगें। इस तरह और भी उस क्षेत्र विशेष की नई–नई जानकारियों भी मिलती रही। इसी गपशप में ट्रेन कब मदुरै स्टेशन पहुंची यह पता ही नही चला। स्टेशन पर उतर कर हमने मंदिर के लिए 2 ऑटो बुक किए और कुछ ही देर बाद ऑटो वाले ने हमें बिल्कुल मंदिर के गेट के पास उतार दिया। हमने जल्दी जल्दी अपना सामान ऑटो से उतारा और उसका भुगतान करके ऑटो वाले को रिलीव कर दिया। फूल–प्रसाद वाली दुकान से प्रसाद लिया और अपना सारा लगेज भी इसी दुकान में सुरक्षित रख दिया। दुकान में रखे सामान को दोबारा चेक करने पर पाया कि हमारा काला बैग मिसिंग है। बैग ऑटो में पीछे की तरफ मैने ही रखा था और उतावलेपन में ही उसे उतारना भूल गया। पलभर में ही मेरा सारा रोमांच गायब हो गया। बैग में ही आगे की सभी ट्रेन टिकटे, होलीडे होम बुकिंग टिकट और एटीम कार्ड थे। सारा प्रोग्राम अब चौपट हो चुका था। बगैर टिकट अब आगे की यात्रा कैसे होगी क्या करें – कैसे करें। मन दुखी हो गया। कुछ भी सूझ नहीं रहा था। सबका मूड खराब हो गया। मंदिर की लाईन में लगे हुए, हाथों में फूल–माला–प्रसाद लिए बच्चें और उनकी माँ मेरी ओर कातर दृष्टि से देख रही थी और मै मंदिर की चोटी की ओर। फिर दोस्त ने ही रास्ता निकाला और कहा "देखो चूंकि अब हम दर्शन हेतु लाईन मे लग चुके है और हमारे पीछे दर्शनों के लिए लोगो की भीड़ बढती जा रही है, अतः अच्छा होगा कि हम यहां पहले मंदिर दर्शन कर लेते है और फिर उसके बाद बैग को खोजते है, मिल गया तो ठीक है वरना वापिस बैंगलोर चलते है, जो हो गया सो हो गया। क्या पता ईश्वर की यही इच्छा हो।"

अब हम बोझिल मन से लाईन में डटे रहें। रह–रह कर मुझे अपने आप पर गुस्सा आ रहा था। ज्यों–ज्यों मंदिर का गर्भगृह नजदीक आ रहा था, मैं बस एक दुआ रट रहा था कि बस मेरा बैग वापिस मिल जाएं ताकि आगे की यात्रा सकुशल पूरी हो सके। हर तरफ माँ पार्वती तथा शिवघोष की जय–जयकार गुंजायमान थी लेकिन मेरे दिमाग में मेरा खोया हुआ काला बैग घूम रहा था। मैने मन ही मन ईश्वर का ध्यान कर अपनी तात्कालिक इच्छा पूर्ति की मांग कि– "भगवान फिलहाल तो

बस बैग वापिस दिला दो बाकि इच्छाओं की पूर्ति भले आप पेंडिग रख लो।"

खैर माँ पार्वती के अच्छे से दर्शन किए और परिकर्मा पूरी करके मंदिर से बाहर निकल आएं। काफी देर से लाईन में खड़ें रहने से सभी थक चुके थे। बाहर आकर हम उसी फूल प्रसाद वाली दुकान पर आ गए जहाँ हमने अपना बाकी सामान रखा था और दुकानदार को हमने ऑटो में खो चुके बैग के बारे में बताया। उसने क्या कहा हमारी समझ में नही आया। यहाँ भाषा की समस्या भी हमारा इम्तिहान ले रही थी। खैर हमने उस दुकान से अपना सामान उठाया और कुछ खाने के इरादे से एक रेस्टोरेंट की ओर जाने लगे। थकान और भूख वैसे ही परेशान थे ऊपर से बैग के खो जाने पर हताश हो चुके थे। फिर भी चलते–चलते बनावटी मुस्कराहट के साथ परिवार सहित मंदिर की फोटो अपने–अपने मोबाइल में खींचना नही भूले। रेस्टोरेंट में बैठकर हमने आपस में चर्चा करके ये फैसला लिया कि अब आगे की तीर्थयात्रा बिना टिकट एवं बुकिंग के संभव नही है अतः अच्छा होगा कि अब वापिस बैंगलोर अपने घर चलते हैं। हमने रेस्टोरेंट से ही रेलवे स्टेशन मदुरै के लिए ऑटो लिया और स्टेशन पहुंचकर बैंगलोर जाने वाली किसी भी ट्रेन की जानकारी पता करने लगे। बैंगलोर के लिए ट्रेन शाम को थी और रिर्जेवेशन वेटिंग में टिकट मिल रही थी। अब हमारे पास 2–3 घंटे का समय बचा था। मै मिसिंग बैंग का खोजने के इरादे से रेलवे स्टेशन पर खड़े अन्य ऑटो वालो से पूछताछ करने लगा कि हम सुबह मंदिर दर्शन के लिए आएं थे और हमारा एक काला बैग ऑटो में ही छूट गया। इस पर कुछ ऑटो ड्राइवरों ने मुझसे कहा– 'ऑटो का नंबर मालूम है क्या' कुछ ड्राईवरों ने आपस में अपनी भाषा मे बात की जो हमें समझ नही आई लेकिन मैं इतना जरूर समझ गया कि ये हमसे सहानुभूति जता रहे हैं और मदद करना चाहते हैं। एक ड्राईवर ने कहा कि ज्यादा नुकसान तो नहीं हुआ, पैसे कितने रहे होंगे बैग में।' मैंने कहा कि पैसे तो कुछ खास नहीं थे लेकिन हमारी आगे की टिकटें, कपडें और एटीएम कार्ड जरूर हैं। थोडी ही देर में कई ऑटो वालो ने हमें घेर लिया। मेरी नजर उस सुबह वाले ऑटो ड्राईवर को ढूंढ रही थी जो हमें स्टेशन से मंदिर तक छोड़कर आया था। कुछ देर के बाद उन ड्राईवरों में से एक बोला कि हां एक

बैग सुबह पार्सल ऑफिस में रामालिंगम ने डिपोजिट किया है किसी पेसेंजर का ऑटो में ही छूट गया था। इतना सुनते ही मेरी जान मे जान आ गई और वो मुझे लेकर पार्सल आफिस के Lost & Found counter पर लेकर गया। वहां पहुंचने पर इंचार्ज को आपबीती बताई। इंचार्ज ने अपने दृष्टिकोण से मेरा वैरिफिकेशन किया और पहचान पत्र आदि की मांग की जो कि मेरे पास नहीं थे। मैंने कहा कि सब कुछ तो उसी बैग मे रह गया। तब उसके कहे अनुसार मैने स्टेशन मास्टर, मदुरै को संबोधित करते हुए एक अनुरोध पत्र लिखा जिसमें अपना परिचय, स्थाई पता, मोबाईल नं, पूरा विवरण दर्ज किया। कुछ ही देर बाद उस पार्सल कलर्क ने मेरा खोया बैग लाकर मुझे सुपुर्द किया तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बैग में रखा सामान सब कुछ सुरक्षित मिला। उसके पश्चात जब मैं उस बैग को लेकर स्टेशन पर इंतजार कर रहे दोस्त और बच्चों के पास गया तो बैग देखते ही सभी के चहेरे खिल गए। तब मैंने उन्हें पूरा वृतांत बताया कि किस तरह एक ऑटो ड्राईवर ने ईमानदारी से कार्य किया तथा रेलवे के Lost & Found counter ने अपने दायित्वों का पालन करके हमारी तीर्थ यात्रा को सफल बनाया। अब हमें तीर्थ यात्रा स्थगित नहीं बल्कि आगे रामेश्वरम की ओर निकलना था। मदुरै स्थित माँ पार्वती के मीनाक्षी मंदिर से मेरी तात्कालिक इच्छा पूरी हुई। उस क्षण हृदय से ^ek ikoZrh dh t ;* का उद्घोष निकला और दक्षिण रेलवे के मदुरै स्टेशन पर Lost & Found counter के स्टॉफ के लिए दिल से आभार प्रकट किया।

v'kksd dqekj
हिंदी अनुवादक
निगमित कार्यालय, कंटेनर कार्पोरेशन

तानाशाह

सुबह बस से उतरते ही खुशी–खुशी मन में एक फिल्मी धुन गुनगुनाते हुए हम अपने आफिस की तरफ चल दिए। आजकल हम उन खुशनसीबों की लिस्ट में अपना नाम देखते थे जो किसी न किसी सरकारी या अर्ध सरकारी दप्तर में कार्य करते थे। खुदा की फजल से मुझे भी एक प्राइवेट कैमिकल कम्पनी में नौकरी मिल गई। नौकरी अस्थाई थी मगर आठ दस महीने बाद पक्की होने की उम्मीद थी। इस नए दप्तर में अभी मुझे चार ही महीने हुए थे। हम अपने आप को हमेशा इस प्रयत्न में लगाए रहते थे कि किस तरह सुपरवाइजर को खुश रख सकें ताकि हम अपनी तरक्की के मार्ग में आई तमाम विघ्न बाधाओं को आसानी से पार कर सकें। इन चार महीनों में हमने अपने साहब को किसी तरह की शिकायत का मौका नहीं दिया था। हमें जितना भी कार्य मिलता उसे शाम से पहले ही निपटा देते और फाईलों के इन्तजार में अपने आप को बैठा पाते। कुछ महीनें ऐसे ही आराम से गुजर गए। मेरा कार्य अच्छी तरह से चल रहा था।

आज भी इसी तरह की उम्मीद लिए मैं दप्तर में दाखिल हुआ। सामने से आते हुए सुपरवाइजर साहब के दर्शन हो गए। मुझे गौर से देखते हुए वे अपने कमरे में दाखिल हो गए। मैं भी जेब से पैन निकाल उनके साथ कमरे में दाखिल हो गया, दैनिक हाजिरी के लिए उनके ही कमरे में जाना होता था। जब हाजिरी दर्ज करके मैं बाहर आने लगा तो पीछे से सुपरवाइजर साहब की कड़कती आवाज सुनाई दी। मि0 उदय, जरा रूकना। मैं सहमा सा सुपरवाईजर के सामने जा खड़ा हुआ और आने वाली मुसीबत के बारे में मन में अन्दाजा लगा लगाकर परेशान हो गया। लाख सोचने पर दिमाग में कुछ भी न आया कि मैंने क्या गलती कर दी जो सवेरे–सवेरे लाईन हाजिर होना पड़ा। आज न जाने किस मनहूस का चेहरा देखने को मिला था। मेरे होठों से धीरे–धीरे संकटमोचन का जाप निकल रहा था। कोई आधे घण्टे तक वे दर्जनों जगह फोन कर करके गुड मार्निग/पाय लागू साहब/आपका बच्चा बोल रहा हूँ साहब जैसे शब्द बोलकर अपने सीनियरर्स को मक्खन लगाते रहे। उसके बाद उसने अपने जैसे और अपनी जैसी/मेल व फीमेल/बूढ़ी और गिरी हुई हस्तियों को गुड मार्निग कर करके बिताई। फिर आखिर में दप्तर की खुबसूरत, हृष्ट–पुष्ट, चालू पुर्जा औरतों को जो उनकी कन्या या पुत्रवधु की उम्र की रही होगी, उनको सलाम बजाया जाने लगा। बीस मिनट तक यह कार्यक्रम भी चलता रहा।

जब उनका यह दैनिक बटरिंग का कार्य निपट गया तो वे मुझसे मुखातिब हुए कुछ समय सुपरवाईजर साहब की पैनी नजरें मेरे चेहरे के ईदगिर्द कुछ तलाशती रही फिर बर्फ जैसे सर्द लहजे में बोलें मि0 उदय, कुछ दिन से तुम्हारी सीट पर फाईलों के ढेर लगे हैं। क्या आजकल काम नहीं करते, पहले तो आपने बहुत अच्छा कार्य किया, अब क्या हुआ। क्या अब नौकरी की जरूरत पूरी हो गई है। जहां नौकरी का सवाल आया, मैं कुछ ज्यादा ही डर गया। डर के मारे शरीर में सिरहन सी दौड़ गई। सारे शरीर में चीटियां सी रैंगने लगी। मैंने कुछ हिम्मत बटोरकर सुपरवाईजर जी से कहा, नहीं साहब, मेरी सीट के साथ जो दायें बायें लड़कियां बैठी हैं, उनका काम भी मुझे दिया जा रहा है। इसीलिए काम कुछ ज्यादा होने के कारण रह जाता है। वैसे कार्य तो पहले से भी ज्यादा लगन और मेहनत से करता हूँ।

उन्होंने इतना सुनना था कि उनका हाथ घन्टी के बटन की तरफ सरक गया और कही दूर घन्टी का धीमा सा स्वर सुनाई दिया। कुछ समय बाद एक चपरासी भागता हुआ कैबिन में आया तो सुपरवाईजर जी ने उसे यह कहकर उल्टे पांव लौटा दिया कि जाकर साहबजादे की सीट पर पड़ी फाईलों को तो गिनकर आना। जरा जल्दी करना, फिर चाय का भी वक्त होता जा रहा है। मेरे मन में बार बार ख्याल आ रहा था कि आज मैं किस मनहूस का चेहरा देखकर चला आया। हाय, वह कमीना मुझसे कुछ बात भी कर लेता तो मुझे अवश्य मालूम हो जाता कि किस ने मुझे सुबह–सुबह अपना मनहूस चेहरा दिखाया है तो आज शाम ही वह पड़ोस छोड़कर कही दूर मकान ले लेता। इसी उधेड़बुन में मुझे ध्यान ही नही रहा कि कब चपरासी आकर चला गया। चपरासी ने आकर बताया है कि तुम्हारी सीट पर 27 फाईलें है। फाईलें ज्यादा बड़े मैटर की भी नहीं हैं अतः तुम एक फाईल को 15 मिनट में निपटाते हो तो मेरे ख्याल से आज शाम तक सारी फाईलें हो जानी चाहिए। अगर आज तुम लन्च न भी लो तो कोई बात नहीं। उस लन्च में भी तुम कम से कम चार पांच फाईलें टाईप कर सकते हो। तुम्हें ज्यादा ही भूख लग जाए तो शाम को घर जाते वक्त केन्टीन में जाकर लन्च कर आना और हां, मेरी पी ए की सीट पर ज्यादा फाईलें मत आने दिया करो। जहां तक हो सके। तुम उसके भी पी ए बनने की कोशिश करो।

हम उस कैबिन से इस तरह उतरा चेहरा लिए बाहर हुए जैसे हमारी इज्जत लुट ली गई हो। बाहर टेलिफोन पर मेरी

पुकार हो रही है। भाभी का फोन था, कल छुटटी लेने को कहा था क्योंकि बड़े भाई के साले साहब जो आजकल रोम में रह रहे है, कल की प्लाईट से दिल्ली आ रहे हैं। भाभी ने बड़े आदेशात्मक लहजे में मुझें अपना आदेश सुनाकर फोन रख दिया था। मगर उन बेचारी को क्या मालूम कि यहां पर मेरे ऊपर क्या काण्ड रचा जा रहा है। मेरी नन्ही सी जान के पीछे मेरा रंगीन बालो वाला साहब हाथ में नंगा चाकू लिए घूम रहा है।

छुटटी की अर्जी लेकर साहब के कमरे में मुझे फिर से जाना पड़ा। मुझे दोबारा आते देखा तो सुपरवाईजर साहब संभल कर बैठ गए। एक टक मेरे चेहरे को ताकते रहे फिर खीजने वाले अन्दाज में चीख उठे, अब क्या हुआ। मैने डरते हुए अपनी दो दिन की छुट्टी की अर्जी उनके सामने सरका दी। मेरी अर्जी को गौर से देखते रहे। फिर उन्होंने जेब से रूमाल निकाल कर अपना नाक पोंछा, गुटके की पन्नी फाड़ उसे अपने मुंह में उडेला, रूमाल से मुँह के बाहर लगे पाउडर को पोछा, फिर अचानक धड़ाम से अपना सीधा हाथ सामने बिछी मेज पर दे मारा। क्या खाक छुटटी मंजूर करूं, काम वाम तो कुछ करते नहीं। सुबह से सारा कार्य तो वैसे ही पड़ा है। न ही तुम मेरी पी ए की फाईलें लेकर टाईप करते हो। बेचारी सुबह से चार बार मेरे केबिन में आकर फूट फूटकर रोकर गई हैं कि उसके पास आज कुछ ज्यादा ही फाईलें आ गई हैं। अपनी कटोरी जैसी आंखों में आसूं भर कर कह रही थी कि उसकी फाईलें किसी और को दे दीजिए सो, तुम से सुबह भी कहा था कि उसकी सीट पर नजर मार लिया करो और उसकी फाईलें अपनी तरफ सरका लिया करो। मगर कान पर से उतार जाते हैं। तू मेरा बिरादरी भाई है इसलिए तेरे से पहले भी कहा था और अब भी कह रहा हूँ, तेरी इसी में भलाई है तू उसका भी काम कर दिया कर और काम करने के बाद फाईलें उस की सीट की तरफ सरका दिया करो। ताकि कहने वालों के मुंह बंद हो जाए कि मैं अपनी निजी सहायक से भी काम करवा लेता हूँ वे भी देख लें कि मैडम भी काम करना जानती हैं और यह काम उसने ही किया है।

मैंने थूक सटक कर अपनी सफाई पेश की, साहब जी, आपने तो अब कहा है मगर वो तो पिछले तीन महीने से अपनी सारी फाईलें अभी तक आपका नाम ले लेकर मुझसे ही तो करवाती रही हैं कि अर्जेन्ट है, साहब ने कहा है, इन्हें पहले कर दो। आप सारा दिन सूट सलवार में हाथ की सिलाई तिरपाई करती रहती हैं। उसका काम न करूं तो आपसे कहने की धमकी देती हैं।

इतना सुनना था, कि वे चीख उठे, वो चाहे यहां कुछ भी करें, मेरी निजी हैं मेरा मतलब निजी सैक्रेटरी हैं। तुझे क्यों मिर्चे लग रही हैं। अब चुपचाप निकल जा यहां से, मैंने जो कहना था, सो कह दिया, तुझे ही उसकी सारी फाईलें निकालनी होगी, समझे। उसकी क्या अब तो पूरे विभाग की निकालनी होगी। अभी मीटिंग बुलाकर सबसे कहला देता हूँ। विभाग में कोई भी टाईपिंग का कार्य आए तो उसे सीधा तेरे पास भिजवा दें। बिरादरी का कुछ ज्यादा ही फायदा उठा कर मेरे सिर पर ही चढ़ा जा रहा है। मैं मिमियाता हुआ कह उठा, लेकिन सर, मेरे पास पहले ही कुछ ज्यादा काम है। यहां तो चाय भी पीना छोड़ दिया है और आज आपने लंच लेने को मना कर दिया है। सुपरवाईजर साहब ने इतना सुनना था, उन्होंने दहाड़ते हुए अपना हाथ धड़ाम से मेज पर दे मारा। वे बार–बार आदत के मुताबिक ऐसा कर रहे थे। अब शायद मेज के सब्र का प्याला भर चुका था। सो, साईड़ में रखी फाईल पर रखा पेपरवेट लूढ़क कर मेज के बीच आ रूका। सुपरवाईजर को इसकी जरा भी भनक न लगी। मेरी किसी बात से भड़क कर उन्होंने फिर मेज़ पर हाथ दे मारा। अगले ही पल कमरे में एक दर्द भरी चीख गूंज गई। साहब ने अपना जख्मी हाथ दूसरे हाथ में लेकर दबा लिया। वे टेबल के मध्य पडे पेपरवेट को इस तरह निहार रहे थे जैसे उसे मैं अपने साथ लाया था और उनकी नजरें बचाकर मेज के बीच रख दिया था। वह कभी उसे तो कभी मुझे देख रहे थे। उनकी कमजोर और बूढ़ी आंखों में आंसू भर आए। अपने आसूंओ को छुपाने हेतू उन्होंने मेरी तरफ पीठ मोड़ ली और हाथ के इशारे से मुझे बाहर निकल जाने को कहा। मैं अपनी अर्जी उनकी मेज पर उसी खूनी पेपरवेट के नीचे रख बाहर निकल आया। वे मेरे साथ दरवाजे तक आए और पीछे से दरवाजा बन्द करके वापस अपनी सीट पर जाकर बैठ गए और अपनी कुर्सी के पुस्त पर पड़े तौलिये को लेकर फूट–फूट कर रोने लगे। उनसे जहां तक हो सका वे इस प्रयास में थे कि उनकी आवाज उनके कमरे से बाहर न जा सके।

मेरा सिर दर्द से बुरा हाल था। सो आगे वाली मेज के कार्य करने वाले एक सज्जन से, जो साऊथ से आए थे, यह कह कर कैन्टीन चला गया कि चाय पीने की इच्छा हो रही है। सुबह –सुबह सिर में दर्द हो चला था। उस समय मुझे चाय की सख्त जरूरत थी। जिसके न मिलने पर मेरा पागल हो जाना निश्चित था। कोई आधा घंटे बाद जब मैं अपने कमरे में आया तो पाया कि सारा सटाफ एक जगह इकठ्ठा जमा है जिससे बहुत शोर हो रहा था। मैंने कांपते–कांपते कमरे में कदम रखा। सभी मेरी तरफ अजीब–अजीब नजरों से देख रहे थे। वे

सज्जन जिनसे मैं कह कर गया था, पास जाकर इस शोर का कारण पूछा तो मालूम हुआ कि बूढ़ा अपने कैबिन से चार पांच बार बाहर आ चुका है। बार–बार तुम्हें बुलाने को कहता है। न जाने क्या बात है, बड़े गुस्से में है। उनके बायें हाथ पर भी पट्टी बंधी हैं। आपके साथ उनकी लड़ाई हो गई, क्या। क्योंकि जब वे सुबह आए थे तो वे सही सलामत थे। उसके बाद जब वे बाहर आए तो उनके हाथ में पट्टी बंधी थी। बार–बार बाहर आकर कह रहे थे कि इस उदय के बच्चे का हिसाब न कर दिया तो मेरा भी नाम नहीं। कई कर्मचारियों को तुम्हारी तलाश में दौड़ाया गया है।

अचानक ही सुपरवाईजर साहब के केबिन का दरवाजा खुला। उस बूढ़े खूसट सुपरवाईजर की चहेती, उसकी लखते जिगर कैबिन से निकल रही थी। उसने अपनी अजगर जैसी आंखों से मुझे घूरा और अपने भारी भरकम नितम्बों को हिलाती हुई फिर से सुपरवाईजर के कैबिन में जा समाई। उसके अन्दर जाते ही तुरन्त चपरासी बाहर आया और बड़े अजीब अंदाज से मुस्कुराकर मुझसे बोला, चल सुपरवाईजर साहब ने तुम्हें अभी तलब किया है। अभी चलो। मैं चपरासी के साथ कैबिन की तरफ चला। मेरा पड़ोसी कर्मचारी मुझे दया भरी दृष्टि से निहार रहा था। वह जिस तरह मुझे देख रहा था उससे ऐसा लगता था कि मैं कैबिन में सुपरवाईजर से मिलने नही, फांसी के तकते पर चढ़ने जा रहा हूँ। मेरे साथ–साथ उसका दिल भी बैठा जा रहा था और मुझे यकिन हो चला था कि इस कार्यालय में आज कोई अहम फैसला होने वाला है।

चपरासी को बाहर खड़ा करके जब अन्दर गया तो पाया कि सुपरवाईजर साहब हीटर पर अपना जख्मी पंजा टिकाए उसे सेंक लगा रहे थे। उसकी जाने तमन्ना उनके साथ सटे सोफे पर बैठी थी। मुझे देखते ही उनकी आंखों में खून तैर आया और वे संभल कर बैठ गए। कुछ देर तो वे मुझे बड़े गौर से देखते रहे शायद समझने की कोशिश कर रहे हो कि मैं वास्तव में क्या बला हूँ। फिर बड़े प्यार से बोले, मि0 उदय, तुम यहां नही टिक सकते, तुम किसी काम के नहीं हो। देहाती हो, ऑफिस के भी कुछ नियम कानून होते हैं। जिनको तुम हरियाणवी जीव नहीं समझ सकते, मैंने सोचा तेरा हिसाब कर दूं क्योंकि मैंने तुम्हें नौकरी देकर बहुत गलत किया है। तुम वाकई में बेहद निक्कमे हो। 'मैं हिम्मत करके बोला, लेकिन सर, वे मेरे से भी दुगुनी तेजी से कुर्सी से उठकर दहाड़े, वॉट सर, मैं कह चुका कि तुम यहां नहीं टिक सकते। अब तो बेटा या तो इस आफिस में तुम ही रहोगे या फिर मैं। मैंने तो लगभग अपनी नौकरी पूरी कर ली हैं, रिटायरमेंट पर हूँ, मेरी नौकरी साली कल जाती हो, आज चली जाए, मगर अब तुझे यहां नहीं टिकने दूंगा। लगातार के वार्तालाप से उन्हें फिर गुस्सा चढ़ आया था।

मगर हाय, अपनी आदत से मजबूर, जिस हाथ में चोट लगी थी, उसे दोबारा पूरी ताकत के साथ धड़ाम से मेज पर दे मारा और उस खूनी पेपरवेट ने, जो अभी तक मेज के मध्य पडा था, उनके हाथ को लपक कर खुशी से चूम लिया। उस पर हाथ पड़ते ही उनकी हद्य विदारक चीख से उनका कमरा क्या, सारा दफतर दहल उठा। वे अपने दूसरे हाथ में अपना जख्मी हाथ लेकर कमरे में नाचने लगे। जिस हाथ पर चोट लगी थी, उस हाथ को वे इस तरह ऊपर उठाए हुए थे, जैसे उसे छत से टच करना चाहते हो। उनकी चीख की आवाज सुनकर सुपरवाईजर के कैबिन के बाहर बैठा चपरासी झटपट अन्दर आया और उसी वक्त बाहर हो गया। उनकी चीख की आवाज से सारा स्टाफ कैबिन के दरवाजे पर आ जमा हुआ। सभी की निगाहें मेरे दोनों हाथों पर टिकी थी, उनका ख्याल था कि शायद जिस हथियार से मैंने उनके साहब पर हमला किया है, उन पर भी हमला कर सकता हूँ। मैं सुपरवाईजर साहब को रोता बिलखता छोड़, केबिन का दरवाजा खोल बाहर निकल आया।

मेरे सीट पर बैठते ही सारे स्टाफ के कर्मचारी मुझे घेर कर यह जानने की कोशिश करने लगे कि अन्दर साहब क्यो रो रहे हैं। क्या तुम्हारी उनसे हाथापाई हो गई हैं। जितने मुंह थे, उतनी बातें बनाकर वें मुझ पर थोप रहे थे। सभी को एक तरफ कर मैने टाईपराईटर पर सर रखकर आंखे बंद कर ली। बार–बार यही ख्याल आ रहा था कि आज तो बच्चू मेरी नौकरी गई। इस कशमकश में मेरा पूरा दिन बीत गया।

दुसरे दिन सुबह मुझे दफतर तो आना पड़ा क्योंकि छुट्टी तो नहीं मिल सकी थी। आते ही पैन लेकर सुपरवाईजर साहब के कैबिन में गया तो उनकी सीट खाली पड़ी थी। दैनिक हाजिरी रजिस्टर में हस्ताक्षर किए और अपनी सीट पर आकर बैठ गया। उसी समय चपरासी ने मुझे एक बेहद ही खुबसुरत लिफाफा लाकर दिया जिसके बदले में पीयनबुक में मेरे हस्ताक्षर लेकर चला गया। मैं हैरान था, न जाने कहां से खत आ गया। मैंने लिफाफा खोलकर देखा। उसके अन्दर सुपरवाईजर साहब की तरफ से मुझे मीमो दिया गया था। जिसमे मुझ पर ढेर सारे आरोप लगाए गए थे तथा उनका जवाब मुझे तीन दिन के अन्दर देना था। मुझ पर लगाए गए आरोप यदि निराधार पाए जाते हैं तो मुझे तत्काल अपने क्षेत्रीय कार्यालय कलकत्ता में अपना कार्यभार संभालना था। क्योंकि इस कार्यालय में इस समय मेरे हेतु कोई पद खाली नहीं

था। अगर मैं वहां जाने से इन्कार करता हूँ तो कार्यालय को अधिकार है कि वे मेरी सेवा को तत्काल निरस्त कर दें।

मैंने अपना माथा पीट लिया। सिर के बाल नोच डाले। मीमों फाड़ कर उसी चपरासी को दे दिया। क्या करता, चिड़ियां तो उड़ चुकीं थी यानि बुढ़ा तो एक महीने की छुट्टी लेकर कहीं दूर किसी हॉलिडे रिसॉट पर चला गया था। जाते–जाते वह मेरे ऊपर ऐसी मिसाईल दाग गया था। जिससे मेरा इतना नुकसान हुआ था। जितना कभी जापान का हुआ था। जिसकी आज–तक भरपाई नहीं हो पाई। हरामी बूढ़े ने मुझ पर ऐसे ऐसे घिनौनें इल्जाम लगाए थे कि जिनसे बच पाना मेरे लिए आसान न था। सात आठ हजार रूपये कहीं से कर्जा उठाकर किसी के कहने पर गठित कमेटी को खिलाए गए मगर वे कुछ काम न आए। हरामजादे उसे भी हराम का माल समझ डकार गए करीब महीने तक यह नाटक होता रहा।

मुझे वहां से हटा दिया गया। हाथ में तीन महीने का नोटिस का चेक लिये जैसे ही आफिस से बाहर आया। तभी बूढ़े सुपरवाईजर की एमबेसडर कार सामने से आती नजर आई। वे उसमें इस तरह बैठे थे जैसे कोई युद्ध जीत कर आ रहे हो। मेरे हाथ में नोटिस चेक का लिफाफा देखकर उनके चेहरे पर खुशी छा गई। उस खुशी के पीछे उनकी हार ने भी अपना सिर उठा रखा था।

l[kohj dekj Hkkj}kt
निजी सचिव, तकनीकी विभाग,
केन्द्रीय भण्डारण निगम, हौज खास

धरती माँ बड़ी माँ

माँ माँ कह पुकारूँ तुझे
कभी धरती माँ, तो कभी बड़ी माँ
देख तेरी ये हालत धरती माँ
आँखे मेरी अब नम है माँ

साझी है तू हम सबकी माँ
पशु पक्षी और हरे भरे वन की माँ
तू ही तो है सबकी जीवन दायनी माँ
कभी धरती माँ, तो कभी बड़ी माँ

जंगल झाड़ नदी नाले पहाड़
सब तेरे ही बच्चे माँ
मानव को जीवन दिया तूने
खाया धोखा अब उससे माँ

तेरे टुकड़ो पर लिखकर मानव नाम अपना
छीना पशु पक्षियों का जहान है माँ
छीन ली मानव ने तेरी हरियाली भी
सोख लिया मिटटी का भी जल सारा
अब बाँध रहा तेरे हर अंग अंग को तारकोल की काल पटटी से

विवश कर रहा तुझे अब मानव माँ
बनने को चण्डी माँ, काली माँ, दुर्गा माँ
कभी धरती माँ, तो कभी बड़ी माँ
देख तेरी ये हालत धरती माँ

सर्वनाश से अगर अब बचना है,
तो बोल ''मानव'' ये मेरी माँ ये तेरी माँ
ये सबकी माँ ये साझे की माँ
ये धरती माँ, ये है बड़ी माँ

lJh i"iyrk
अधिकारी रूम सर्विस
भारतीय होटल निगम–सेन्टॉर होटल दिल्ली

यादों का इंद्रधनुष

गोद में बिटिया और थाली में परांठे की चूरी लिए अभी मैं बालकनी में आकर बैठी ही थी कि कहीं से एक चिड़िया आई और थाली में चोंच मारकर फुर्र हो गई। मैं जरा–सा चौंकी... फिर बिटिया को परांठा खिलाने की जुगत में लग गई। लेकिन उसका ध्यान भटकाने के लिए तो चिड़िया का यह हवाई हमला ही काफी था। मैंने उसकी दादी जी की तरकीब अपनाते हुए 'एक निवाला हाथी का, एक निवाला घोड़े का' कहते हुए उसके मुँह में परांठे की चूरी डालने की बहुत कोशिश की पर नाकाम रही। हारकर मैं भी बालकनी के ठीक सामने लगे बॉटल–ब्रश के उस पेड़ की ओर देखने लगी जहां चूरी चुराने के बाद चिड़िया जा बैठी थी और अब बिटिया रानी टकटकी लगाए बैठी थी।

टहनी पर एक घोंसला बना था जिसमें से सूखे तिनके और कपड़ों की चिंदियां झांक रही थीं। घोंसले में चिड़िया के तीन नौनिहाल थे जिन्हें वह अपनी चोंच में भरी चूरी बारी–बारी से खिला रही थी। उनके सफेद, शफ्फाफ पेट पेड़ की पत्तियों से छनकर आती सर्दी की कुनकुनी धूप में चमक रहे थे और अपनी चिकनी चोंचों से वो चूरी खाने की ऐसी होड़ा–होड़ी में लगे थे मानो हर कोई अपनी माँ से कह रहा हो, 'पहले मैं', 'पहले मैं'।

दिल्ली में दुर्लभ इस मनोहारी दृश्य से अधरों पर बरबस ही मुस्कान दौड़ गई। मन मानो अचानक पुरानी यादों की खुशबू से भर गया। मुझे याद आ गए वे दिन जब मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ती थी और दिसंबर के पहले हफ्ते में अर्धवार्षिक परीक्षाएं खत्म होने के बाद मैंने बोर्ड की परीक्षा की तैयारी घर पर ही रहकर करना तय किया था। ड्राइंगरूम के बाहर का बड़ा–सा बरामदा और उसके आगे का लॉन पढ़ने के लिए मेरी पसंदीदा जगह हुआ करते थे। स्कूल से छुट्टियां लेने के साथ ही मैंने लॉन में पढ़ने के लिए एक कुर्सी–मेज स्थायी रूप से रख दिए थे और तड़के जो मैं वहाँ डेरा डालती तो तब तक वहीं बैठी रहती जब तक शाम को हवा सर्द नहीं हो जाती।

पढ़ाई के साथ–साथ तिल के लड्डू और रेवड़ी–मूँगफलियों का दौर भी चला करता था। एक दिन मैं अपनी किताब में मग्न थी कि तभी कुट–कुट की आवाज ने मेरा ध्यान खींचा। क्या देखती हूं कि मेरी मेज के नीचे रखी मूँगफलियों की तश्तरी में एक गिलहरी बैठी है और उसके हाथ में एक मूँगफली है। नजारा दिलचस्प था, इसलिए मैं बिना आहट किए उसकी हरकतें देखने लगी। आगे जो मैंने देखा वो दिलचस्प होने के

साथ–साथ हैरान करने वाला भी था। गिलहरी ने पहले अपने हाथों से मूँगफली का पीला छिलका निकाला, फिर बड़ी सफाई से उसका लाल छिलका भी हटाया और उसके बाद बड़े मजे से मूँगफली को कुतरने लगी। गिलहरी की आंगिक चेष्टाएं इंसानों से इस कदर मेल खाती हैं, इसका मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था। फिर तो यह रोज का क्रम बन गया। मैं जानबूझकर मेज के नीचे तश्तरी में कभी मूँगफली तो कभी लड्डू रख देती और तमाशा देखती। गिलहरी ने शायद पक्षी–जगत के अपने मित्रों को भी न्यौता दे दिया था और अब माल उड़ाने वालों में मैना, गौरेया और चमकदार लाल चोंच वाली एक चिड़िया भी शामिल हो गई थी। थाली में रखे सामान को लेकर हर किसी की अपनी पसंद थी और उसे खाने का अपना अलग अंदाज भी। मैंने लॉन में मिट्टी का परिंडा भी रख दिया था और खाने के बाद ये चिड़ियां अपनी चोंच में बूंद–बूंद पानी लेकर उसे पीती भी और खुद को भिगोतीं भी। कुछ दिन बीतते–बीतते तो उन्हें मेरी उपस्थिति से फर्क पड़ना ही बंद हो गया था।

दिनभर लॉन में बैठे रहने से गाहे–बगाहे कानों में कई मधुर ध्वनियाँ पड़ ही जाती थीं। कभी चिड़ियों की चींचीं सुनाई देती तो कभी सुग्गों की कूहूँ–कूहूँ। मुझे ध्यान है कि भोर होते ही पिताजी का पहला काम घर के आँगन, छत और चारदीवारी में बाजरा डालने का होता था। कभी उठने में देरी हो जाती तो कबूतर छत पर चोंच मारने लगते, उनके चोंच मारने की आक्रामकता से साफ पता चलता था कि वे अपने 'नाश्ते' के लिए बेसब्र हो रहे हैं। घर के बाहर लगे बिजली के तार पर कतार में बैठे तोते कोरस में न जाने कौन–सा लोकगीत गाते थे। नर तोतों के गले में पड़ी लाल कंठियों की सादगी मिश्रित खूबसूरती नौलखों को भी मात देती थीं।

मन में पुरानी यादों का इंद्रधनुष उभरा तो बरबस 'माताजी' का भी स्मरण हो आया। 'गाय हमारी माता है' की तर्ज पर हमारा

पूरा परिवार उन्हें इसी नाम से बुलाता था। वे कुछ चितकबरे रंग की थीं और वर्षों तक हमारे घर आती रहीं। ये तो पता नहीं कि वो कहाँ से आती थी पर उनके आने का समय जरूर निश्चित था। माँ सुबह खाना बनाना शुरू करने पर पहली रोटी उनके नाम की बनातीं। सुबह–सवेरे नाश्ते के लिए आने वाले कबूतरों से उलट 'माताजी' में अत्यंत धैर्य था, शायद वो 'माताजी' थीं इसलिए दिन में करीब 2 बजे वो घर के मेनगेट पर खड़ी होकर रंभाती और अपनी रोटी लेकर चुपचाप वहाँ से चली जाती। हैरानी मुझे इस बात की थी कि उन्होंने कभी चारदीवारी में लगे किसी पौधे को उदरस्थ नहीं किया।

अचानक बिटिया की ताली की आवाज से मैं वर्तमान में लौटी। एक बार फिर चिड़िया बालकनी की रेलिंग पर बैठी थी। प्रकृति का इशारा समझ मैं चूरी की थाली बालकनी में ही छोड़ बिटिया को लेकर अंदर चली आई और सोचने लगी कि रोजमर्रा के जीवन में कितने ही सुखद क्षण अनायास ही हमारी झोली में आ गिरते हैं पर जीवन की आपाधापी में हम उन्हें महसूस ही नहीं कर पाते। महानगरों के 'फ्लैट कल्चर' में तो चिड़िया, तोता, गाय जैसे उन आम पशु–पक्षियों का नजारा भी दुर्लभ होता जा रहा है जो अन्य शहरों में घर–परिवार का हिस्सा होते हैं।

मुझे डर है कि कहीं ऐसा न हो जाए कि आने वाली पुश्तें तोता, मैना और गिलहरी जैसे पशु–पक्षियों को 'गूगल इमेजेज' पर ही देख पाएं और गाय पर पाँच पंक्तियाँ लिखने के लिए भी उसे इंटरनेट की मदद की जरूरत पड़े। गाय माता, बिल्ली मौसी और चंदा मामा किस्से–कहानियों का ही हिस्सा न बनकर रह जाएँ। अपने बच्चों को प्रकृति से जोड़ने की सीधी जिम्मेदारी हमारी है। आइए, अपने घर के बाहर पशु–पक्षियों के पानी पीने का बर्तन रखकर शुरुआत करें और उसमें रोज नया पानी भरने की जिम्मेदारी अपने बच्चों को दें। मॉल के साथ–साथ बच्चों को खुले पिकनिक स्पॉट्स पर भी ले जाएं ताकि वो भी अपने हिस्से के उन खुशनुमा लम्हों को जरूर जी सकें जिन्हें आप–हम अब तक अपनी यादों की पोटली में संजोए हैं।

ehr ekFkj c/kokj
अनुवादक (राजभाषा विभाग)
सेल निगमित कार्यालय

"समय का चक्र"

बीत जाता है समय कुछ ऐसे,
फिसल जाती है रेत, हाथ से जैसे।
बचपन में बड़े होने का सपना,
बड़े होकर, दुनिया को मुठ्ठी में बाँधना।
सब सपने गुजर जाते है ऐसे,
पानी बह जाए नदी में जैसे।
बचपन लगे जिंदगी की सुबह,
जवानी जैसे चमकती दोपहरी।

बुढ़ापा जिंदगी की सुनहरी शाम जैसी
जिंदगी का समय गुजरे ऐसे
दिन का सूरज ढल जाए जैसे।
समय के साथ चलना है जिंदगी
सुख दुःख सब है इसके रंग रूप।

je'k pUæ 'kDy
वरिष्ठ प्रबंधक
बीईएमएल लिमिटेड दिल्ली

"आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः"

महान दार्शनिक सोक्रेटिस (Socrates) का कथन है कि ''तत्व ज्ञान ही धर्म है'' ''(Virtue is Knowledge)

भारतीयता केवल एक भौगोलिक परिवृत्ति की छाप नहीं, एक विशिष्ट आध्यात्मिक गुण है, जो भारतीय को सारे संसार से पृथक करता है एवं भारत की आत्मा सनातन है।

विनम्रता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता, पवित्रता, आत्मसंयम, इन्द्रि यतृप्ति के विषयों का परित्याग, आत्म–साक्षात्कार की महता इन सब गुणों से ही व्यक्ति का व्यक्तित्व पूर्ण होता है एवं तभी अज्ञान से बाहर आकर व्यक्ति वास्तविक ज्ञान 'तत्व' के ज्ञान से लाभान्वित होता है।

दैहिक स्वभाव पर भी समबुद्धि रूप परिणाम प्रतिबिम्बत होने से संसार के सभी प्राणियों में अपने आत्मा का दर्शन करता है अर्थात सबको अपना मानता हो वही मानव वास्तव मे पंडित है न की केवल पंडित कुल में जन्म लेने से। पंडित से वास्तव मे जीवन की परम उपाधि है जो की कर्मो के कारण मिलती है न की जन्म के कारण। dchj nkl th us Hkh dgk g fd ^^<kbl vk[kj çse dk i<s lks ifMr gks,^^

जीवन ''स्वयं को जानने'' की परियोजना है। जीवन का तर्कसंगत रूप वह है जो विशेष रूप से ध्वनि तर्कों पर आधारित है न कि विचारों, भावनाओं या विश्वासों पर। दर्शन हमें यह बताने में सक्षम होने के लिए कहता है कि हम राय, या विश्वास क्यों धारण करते हैं। हमें भावनाओं की बजाय तर्क का उपयोग करने की जरूरत होती है।

बुद्धि यानि शिक्षा पूरी दुनिया को बदल सकती है यहाँ ज्ञान शुद विचारों के लिए खड़ा है। दिव्य बुद्धि के साथ एक इंसान अपने लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए महान भाग्य और चिरस्थायी अभिरुचि ला सकता है। यह परीक्षित जीवन का अर्थ बताती है। अपरिचित जीवन में, नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है और लोगों को इसका बोध न होने पर उनकी अंतरात्मा की आवाज को मार देता है। अपरिचित जीवन में मनुष्य अधिक भौतिकवादी हो जाता है। भगवान बुद्ध ने कहा था कि केवल पवित्रता ही हमें अनंत काल दे सकती है। पवित्रता अध्यात्मवाद है।

मध्युगीन भारत में संत रविदास जो की एक महान समाज सुधारक है, ने भक्ति के मार्ग पर चलते हुए सत्य का पालन करना ही सच्ची ईश्वर की भक्ति और सेवा बताया है। संत रविदास के ऐसे विचार आज भी हम सभी के अनुकरणीय है ''जन्म के कारनै, होत न कोउ नीच, नर कूँ नीच करि डारि है, ओछे करम की कीच'' रविदास जी कहते है कि सिर्फ जन्म लेने से कोई नीच नही बन जाता है लेकिन इन्सान के कर्म ही उसे नीच बनाते है। जैसे आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः की विचारधारा मे पंडित मानव अपने कर्मों से बनता है। वसुधैव कुटुम्बकम् को मूल आधार मानते हुए संत रविदास जी ने लिखा है कि

,lk pkg jkt eS] tgk feys lcu dks vUuA
NkV cMk lc le cl] jnkl jg çlUuAA

रैदास जी ऐसे समाज में ऐसी शासन व्यवस्था चाहते है जहाँ सबको भोजन मिले, कोई भी भूखा न सोए और जहाँ छोटे बड़े की कोई भावना न रहे–। सभी मनुष्य समान हो और प्रसन्न रहे। इस भूमंडल के सभी जीव धारी समान है।

प्रत्येक प्राणी में परमात्मा का निवास है। इस घटघट वासी परमात्मा का जो दर्शन कर सके समझना चाहिए कि – ईश्वर का साक्षात्कार हो चुका। प्राणियों व समाज की सेवा करने से बढ़कर दूसरी ईश्वर भक्ति हो नहीं सकती। दूसरों को सुखी एवं समुन्नत बनाने के लिए जिसने कुछ किया है उसे आत्म–संतोष, सहायता द्वारा सुखी हुए जीवों का आशीर्वाद और परमात्मा का अनुग्रह मिलना सुनिश्चित है। प्रेम से बढ़कर इस विश्व में और कुछ भी आनन्दमय नहीं है। जिस व्यक्ति या वस्तु को हम प्रेम करते हैं वह हमें अतीव सुन्दर प्रतीत होने लगती है। इस समस्त विश्व को परमात्मा का साकार मान कर उसे अधिक सुन्दर बनाने के लिए यदि उदार बुद्धि से लोक मंगल के कार्यों में निरत रहा जाए तो यह ईश्वर के प्रति तथा उसकी पुण्य वृत्तियों के प्रति प्रेम प्रदर्शन करने का एक उत्तम मार्ग होगा। इस प्रकार की हुई ईश्वर उपासना कभी भी व्यर्थ नहीं जाती।

वर्तमान में इस दुनिया में सारे लोगों ने सुखी होने का आयोजन कर लिया है, दूसरों की आंखें बस दर्पण मात्र हैं सभी लोग मुस्कुराते और आनंदित मालूम होते हैं क्योकि सभी ने ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' को आत्मसात कर लिया है।

lqjUæ flg
मुख्य प्रबन्धक वित्त एवं राजभाषा
समन्वयक उत्तरी अंचल
हिन्दुस्तान पेट्रोलियम

महकते फूल

उँगलियाँ हम पे उठाने वालो,
अपने दामन के दाग तो देखे होते।
महकते फूलों को सूंघने वालो,
उजड़े हुए बाग तो देखे होते।
मेरी खुशहाली पर आज जलने वालो,
मेरी बरबादी के हाल तो देखे होते।
दोस्तों की मेहरबानियों के जिक्र से पहले,
दोस्तों के दिए घाव तो देखे होते।
बेवफाई का इलजाम लगाने से पहले,
बेवफाओं के दिल के घाव तो देखे होते।

मासूम नौजवानों को गुमराह करने वालो,
जरा उनके घरों के हाल तो देखे होते।

e/k ckyk nvk
वैयक्तिक सहायक (अशोक समारोह प्रभाग)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड (आईटीडीसी)

चुप चुप रहना सखी

(1) चुप चुप रहना सखी,
किसी से न कहना सखी।
ये दर्द जो हमने सहा,
हर जुल्म की थी इंतहा।
बचपन में खोदी हंसी,
तुम्हारी वो गुड़िया सखी।
भाई को प्यार मिला,
हमने क्या की थी खता।

(2) चुप चुप रहना सखी,
किसी से न कहना सखी।
वो रक्षा का बंधन जो था,
शिक्षा का हक ले गया।
वो राखी का वादा तो बस,
झूठी रसम बन गया।
उस राखी से ही बांध कर,
हर सपने को दफना दिया।

(3) चुप चुप रहना सखी,
किसी से न कहना सखी।
जब हाथों में मेंहदी लगी,
तुम तो बस तेरह की थी।
वंश को तुमने जना,
और दुनिया से ले ली विदा।
ये बात जो मैंने कही,
चुप चुप रहना सखी।

y{; 'kek
वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक (एमआईएस)
केन्द्रीय भंडारण निगम

हिंदी

हिंदी हमारी पहचान है,
हिंदी हमारी मुस्कान है,
धरती हमारी हिंदी और
हिंदी ही आसमान है।

हिंदी में माँ की ममता है,
हिंदी में पिता का आशीर्वाद है,
भाई का स्नेह हिंदी में और
हिंदी में ही बहना का प्यार है।

समाज की समरसता हिंदी में,
बहती हिंदी में शीतल प्यार है,
हिंदी में नदिया की धार है,
नैया भी अपनी हिंदी में और
हिंदी में ही मांझी की पतवार है,
हिंदी में ही जीवन का
मिलता हमें सार है।

हिंदी में ही दिन है,
हिंदी में ही रात है,
दुःख की संवेदना हिंदी में और
हिंदी में ही सुख की बरसात है।

सवा, डेढ और ढाई का हिंदी देता ज्ञान है,
उन्नासी और नव्वासी का फर्क जो समझो,
तो होता सच में हिंदी का ज्ञान है।
हिंदी में रहीम है हिंदी में ही रहमान है,
सभी धर्मों को साथ चलने का हिंदी में अरमान है।

हिंदी में रफी भी, हिंदी में मुकेश भी
हिंदी में ब्रह्मा–विष्णु और हिंदी में महेश भी।
हिंदी में बस प्रेम है हिंदी में नहीं द्वेष है
द्वार हिंदी के इतने विशाल कि
अन्य भाषाओं का इसमें सुगमता से प्रवेश है।

हिंदी में जीवन के सुनहरे गीत भी,
हिंदी में सामाजिक रीत भी,
हिंदी में मीत भी, हिंदी में प्रीत भी,
हिंदी के लेखक और हिंदी के कवि भी,
चाँद हिंदी के और हिंदी के रवि भी।

हिंदी वीरों की गर्जना भी
हिंदी संस्कारों की सर्जना भी
हिंदी अच्छाइयों की उपासना भी,
हिंदी बुराईयों की भर्त्सना भी,

हिंदी सबको समाहित कर चलने वाली
हम हिन्दुस्तानियों की धार है
हिंदी और हम हिन्दुस्तानियों के
जीवन का बस यही सार है।

कवि सुनील का हिंदी के बारे में,
कुछ ऐसा ही विचार है,
हिंदी का प्रचार है, हिंदी का प्रसार है,
कवि बनाने के लिए हिंदी दोस्तों का
शत् शत् आभार है।

सुबह दोपहर, शाम और रात्रि का,
बस शुभ शुभ नमस्कार है।

Jh lquhy dqekj
अपर महाप्रबन्धक/सिविल, कार्पोरेट कार्यालय,
साकेत, इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड

नराकास के तत्वावधान में इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

}kjk fnYyh miØeksa d fy,
^*v,uykbu ihihVh çLrqrhdj.k çfr;ksfxrk** dk vk;kstu

fo"k;% lxBu esa jktHkk"kk dk;kZUo;u dh fLFkfr&miyfC/k igy ,oa lHkkouk

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) नई दिल्ली के तत्वावधान में Þbathfu;lZ bafM;k fyfeVsMß मुख्यालय द्वारा ऑनलाईन पीपीटी प्रस्तुतीकरण प्रतियोगिता का दिनांक 30–05–2022 को आयोजन किया गया। श्री नगेन्द्र मिश्र, सहा. महाप्रबंधक (राजभाषा) ने प्रतियोगिता के प्रारंभ में उपस्थित सभी प्रतिभागियों एवं निर्णायक मंडल का स्वागत किया। प्रतियोगिता का उद्घाटन श्री कुमार पाल शर्मा, उपनिदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय द्वारा किया गया साथ ही श्री संजीव कुमार, सदस्य सचिव, नराकास द्वारा नराकास का परिचय दिया गया।

श्री अतनु भौमिक, कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) ई.आई.एल. ने प्रतियोगिता के आयोजन पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि नराकास के नेतृत्व में हमारे संगठन को इस प्रतियोगिता के आयोजन करने का अवसर प्राप्त हुआ। यह केवल एक प्रतियोगिता ही नहीं है बल्कि यह एक अवसर भी है जब हमें दूसरे संगठनों में हिंदी को बढ़ाने के लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी मिलती है। इससे प्रेरणा भी मिलती है और नई दिशाएँ भी मिलती है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन हिंदी को और गति प्रदान करेंगे।

प्रतियोगिता में नराकास, नई दिल्ली से जुडे 20 सदस्य उपक्रम शामिल हुए जिसमें से 10 कार्यालयों के निम्नलिखित कार्मिकों ने प्रतियोगिता में भाग लिया:–

Ø- l-	lxBu dk uke	Ø- l-	lxBu dk uke
1.	सेल	6.	भाविप्रा, निगमित मुख्यालय
2.	हिन्दुस्तान पैट्रोलियम	7.	मेकॉन लिमिटेड
3.	गेल (इंडिया) लिमिटेड, निगमित कार्यालय	8.	एनएसएफडीसी
4.	पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटड	9.	भारत पर्यटन विकास नि. लि.
5.	बीएचईएल	10.	बीएचईएल कॉर्पोरेट कार्यालय

सभी प्रतिभागियों ने अपने–अपने संगठन में ÞjktHkk"kk dk;kZUo;u dh fLFkfr&miyfC/k igy ,oa lHkkoukß के संबंध में पीपीटी प्रस्तुत की। प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वय कार्यालय गृह मंत्रालय एवं सुश्री शोभना श्रीवास्तव उपनिदेशक, पैट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय भी उपस्थित थे। दोनो अधिकारियों ने प्रतिभागियों को अपने बेहतरीन प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित किया। श्री कुमार पाल शर्मा ने विस्तार से सभी प्रस्तुतियों की समीक्षा की और प्रतिभागियों के साथ विचार विमर्श किया। उन्होंने प्रतियोगिता की उपयोगिता और राजभाषा कार्यान्वयन की उत्तम पद्धतियों को परस्पर शेयर करने का अनुरोध भी किया और कहा कि इससे हिंदी के प्रचार को सार्थकता मिलेगी।

प्रतियोगिता का बेहतरीन संचालन श्री सतीश कुमार, उप प्रबंधक (राजभाषा) के द्वारा किया गया। साथ ही उन्होंने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए सभी प्रतिभागियों एवं सभी संगठनों के कार्मिकों के साथ निर्णायक मंडल के अधिकारियों का धन्यवाद देते हुए प्रतियोगिता का समापन किया।

भारतीय समाज में बहुभाषिकता और अनुवाद

Þdkl & dkl ij ikuh cny] pkj dkl ij ok.khß

जी हाँ, भारत एक ऐसा देश है, जहां प्रत्येक कोस पर पानी का स्वाद बदलता है और प्रत्येक चार कोस पर वाणी का अंदाज। वस्तुतः भारत केवल विविध जाति, धर्म और संस्कृति का ही नहीं बल्कि विविध भाषाओं का भी देश है। भारतीय समाज ने अपने देश के विकास के साथ–साथ यहां की भाषाओं के विकास का भी एक दौर देखा है। जैसे–जैसे हमारे समाज का विकास हुआ, इसका प्रभाव भाषा पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता गया। यही कारण है कि एक ऐसा भी दौर था जब भारत में लोकभाषाओं का प्रचलन था। लेकिन जैसे–जैसे समाज का विकास हुआ, शिक्षा का प्रसार हुआ, व्यवसाय के लिए लोग एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर अपने कदम बढ़ाने लगे, वैसे–वैसे भाषा का स्वरूप भी परिवर्तित होता गया। शायद यही कारण है कि आज लोकभाषाएं लुप्तप्राय हो गई हैं और इनका स्थान क्षेत्र विशेष की बोलियों या आस–पास के क्षेत्र की भाषाओं ने ले लिया है। किन्तु इसका यह अर्थ बिल्कुल भी नहीं है कि वर्तमान में भारत में अन्य भाषाएं जीवंत नहीं है।

भाषा हमारी अस्मिता का अभिन्न अंग है। हमारा नाम, निवास स्थान, देश आदि से हमारे परिचित हमें पहचानते हैं किन्तु अपरिचित के समक्ष हमारी भाषा ही हमारी पहचान बनती है। तभी तो किसी व्यक्ति के मुख से खम्मा घणी सुनते ही हम समझ पाते हैं कि उसका संबंध राजस्थान से है। जाहिर है कि अपरिचित व्यक्ति से जब भी हमारा परिचय होता है तो हमारा औपचारिक परिचय बाद में होता है; पहले हम एक दूसरे को भाषा के आधार पर ही समझने का प्रयास करते हैं कि सामने खड़े व्यक्ति का संबंध किस स्थान से है और फिर भौगोलिक आधार पर हम यह भी अनुमान लगा लेते हैं कि इसका स्वभाव कैसा होगा। शायद यही कारण है कि भारतीय व्यक्ति चाहे कितनी भी अन्य भाषाएं क्यों न सीख लें, वह अपनी मातृभाषा के प्रति अपने प्रेम और लगाव को हमेशा जीवंत रखता है। इसलिए भारतीय समाज में बहुभाषिकता की स्थिति बनी हुई है।

ऐसे बहुभाषिक देश में व्यक्ति को अपने रोजमर्रा के जीवन में स्थानीय स्तर पर तो अनुवाद का सहारा लेना ही पड़ता है, किन्तु जब व्यक्ति जीविकोपार्जन या व्यवसाय के उद्देश्य से अपने स्थान को छोड़कर किसी अन्य स्थान की ओर जाता है, तब निःसंदेह उसे भाषा संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और ऐसी परिस्थितियों में अनुवाद की प्रक्रिया एक अहम भूमिका का निर्वाह करती है। अनुवाद से तात्पर्य यहां एक भाषा में बोली या लिखी गई बात को दूसरी भाषा में मौखिक या लिखित रूप में व्यक्त करने से है।

मनुष्य को सभी प्रणियों में श्रेष्ठ इसलिए माना जाता है क्योंकि इसे भाषा के रूप में ईश्वर का अनुपम वरदान मिला है। भाषा मूलतः मनुष्य द्वारा अपने भावों और विचारों आदि को व्यक्त कर पाने का माध्यम है। इसलिए भाषा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। वर्तमान परिपेक्ष्य में यदि हम यह कहें कि भाषा की तरह अनुवाद भी मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। भारत के इस बहुभाषिक समाज में अलग–अलग परिस्थितियों और अलग–अलग क्षेत्रों में प्रायः हमें अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। निम्न बिन्दुओं के माध्यम से हम बहुभाषी समाज में अनुवाद के महत्व और आवश्कता को समझ सकते हैं :

- jktejk d thou e vuokn % मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बच्चा जब बोलना सीखता है, तब वह सबसे पहले अपनी मातृभाषा अर्थात् माता द्वारा बोली जाने वाली भाषा अथवा घर में बोली जाने वाली भाषा बोलता है। फिर जैसे–जैसे वह बड़ा होता है उसके माता–पिता या परिवार के सदस्य उसे शिष्टाचार सिखाने की प्रक्रिया में यह भी सिखाते हैं कि उसे परिवार के सदस्यों के अलावा अन्य लोगों से कैसे और किस भाषा में बात करनी है। यहीं से व्यक्ति के जीवन में आरम्भ हो जाती है अनुवाद की प्रक्रिया। क्योंकि बच्चा जब अपने घर पर होता है, तब वह अपने माता–पिता से अपनी भाषा में बात करता है, लेकिन जब वह स्कूल जाता है या मित्रों से मिलता है या किसी रिश्तेदार का उसके घर पर आगमन होता है, तब वह किसी मानक भाषा जैसे हिन्दी अथवा वहां की क्षेत्रीय भाषा जिसे सामने वाला समझ सके, उस भाषा में बात करना आरम्भ कर देता है। आपके मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या अपनी भाषा के अलावा दूसरी भाषा में बात करना भी अनुवाद है? इसका उत्तर है नहीं। दूसरी भाषा में बात करना अनुवाद नहीं है, किन्तु पहले किसी बात को अपनी भाषा में सोचना और फिर उसे दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना अनुवाद ही है और हम प्रायः ऐसा ही करते हैं कि किसी भी बात को पहले अपनी मातृभाषा में सोचते हैं, फिर उसे दूसरी भाषा में मौखिक अथवा लिखित रूप में अभिव्यक्त करते हैं। ऐसे कई उदाहरण हैं जब हम

अपने दैनिक कामकाज के दौरान अनुवाद का सहारा लेते हैं। जैसे बाजार में दुकानदार के साथ प्रयोग की जाने वाली भाषा, किसी सरकारी या गैर सरकारी कार्यालय में ग्राहक के रूप में प्रयोग की जाने वाली भाषा इत्यादि। अतः परिस्थिति के अनुसार हमारी भाषा और अनुवाद का स्वरूप परिवर्तित होता रहता है।

- 0;kikj d{k= e vuokn % किसी भी व्यापार या व्यवसाय का एकमात्र उद्देश्य लाभ अर्जन होता है, इसलिए कोई भी व्यापार जिस क्षेत्र से आरम्भ होता है, वहीं तक सीमित नहीं रहता। अपितु समय के साथ–साथ उसका विस्तार होता है और एक समय ऐसा भी आता है, जब उस व्यापार से जुड़े उत्पाद समस्त देश में उपलब्ध हो जाते हैं और उन उत्पादों के आयात–निर्यात तथा क्रय–विक्रय की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। ऐसे में व्यापारियों को भिन्न–भिन्न स्थानों पर विभिन्न भाषा–भाषी व्यापारियों के साथ सम्पर्क साधना पड़ता है। इसलिए व्यापार के विस्तार में अनुवाद अहम भूमिका का निर्वाह करता है।
- foKkiu d{k= e vuokn % यद्यपि विज्ञापन का मूल संबंध व्यापार से ही है। यह कहावत प्रचलित है कि जो दिखता है, वही बिकता है। इसीलिए अधिकांश व्यापारी अपने व्यापार के विस्तार के लिए विज्ञापन का सहारा लेते हैं। चूंकि विज्ञापन ग्राहकों को प्रभावित और आकर्षित करने के उद्देश्य से बनाए जाते हैं इसलिए यह अनिवार्य हो जाता है कि विज्ञापन भी ग्राहकों की भाषा में ही हो। अतः अपने उत्पाद को अधिक से अधिक ग्राहकों तक पहुंचाने के उद्देश्य से एक ही उत्पाद का विभिन्न भाषाओं में विज्ञापन तैयार किया जाता है। इतना ही नहीं क्षेत्रीय स्तर पर संबंधित क्षेत्रीय भाषा में उसका प्रदर्शन भी किया जाता है। साथ ही उत्पाद के उपयोग से संबंधित सूचनाएं भी अब कई भाषाओं में उपलब्ध कराई जाती हैं। ऐसे ही उत्पाद के होड्रिंग/पोस्टर आदि भी अलग–अलग भाषाओं में तैयार और प्रदर्शित किए जाते हैं, जिसमें अनुवाद और अनुवादक की भूमिका अहम होती है ।
- f'k{kk d{k= e vuokn % सामान्यतः ज्ञान – विज्ञान के विषय एक ही भाषा में पढ़ाए जाते हैं। किन्तु भारत जैसे बहुभाषिक देश में शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। इसकी एक प्रमुख वजह यह भी है कि व्यक्ति अपनी जीविका के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर जाता है और वहीं निवास करता है। परिणामस्वरूप उनके भाषायी क्षेत्र में परिवर्तन होता है और उनके बच्चों को उसी परिवर्तित भाषायी क्षेत्र के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करनी पड़ती है। इसलिए देश–विदेश में विद्यमान ज्ञान–विज्ञान, वाङ्मय और साहित्य आदि विषयों से संबंधित विषय–वस्तु को छात्रों को उपलब्ध करवाने और समझने के लिए शिक्षकों को अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है अर्थात् विद्यार्थियों को उनकी भाषा में पढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है।
- ç'kklu d{k= e vuokn % चूंकि प्रशासन का सीधा संबंध देश के नागरिकों से होता है, इसलिए बहुभाषिक समाज में प्रशासन से संबंधित कार्य भी बहुभाषी होते हैं। ऐसे में प्रशासनिक कार्यों को सुगमतापूर्वक संपन्न करने के लिए एक मानक भाषा के रूप में राजभाषा को अपनाया जाता है। जहां तक भारत की बात है तो यहां स्वतंत्रता संग्राम में सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलित रही हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाया गया। किंतु संवैधानिक प्रावधानों के कारण अंग्रेजी के प्रचलन के कारण प्रशासनिक पत्र–व्यवहार के लिए निरंतर अंग्रेजी से हिन्दी अथवा एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता पड़ती है।
- i;Vu d{k= e vuokn % सम्पूर्ण विश्व में पर्यटन कई लोगों के लिए जीविका का माध्यम है। पर्यटन के उद्देश्य से कई लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हैं और भाषायी विविधता के कारण उस पर्यटन स्थल के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता आदि के संबंध में जानने के लिए स्थानीय गाइड की आवश्यकता पड़ती है, जो उन्हें उनकी भाषा में जानकारी प्रदान कर सके । इसके अलावा पर्यटन स्थल के आस–पास स्थानीय नागरिक, स्थानीय वस्तुओं और सेवाओं तथा भोजन इत्यादि का व्यवसाय करते हैं, जिसके लिए न केवल व्यवसायियों को बल्कि ग्राहकों को भी विचारों के आदान–प्रदान या वस्तुओं और सेवाओं के क्रय–विक्रय के लिए अनुवाद की आवश्यकता है।
- lkfgR; d{k= e vuokn % साहित्य समाज का दर्पण होता है। किसी भी समाज को जानने – समझने के लिए साहित्य का अध्ययन भी एक प्रमुख स्रोत होता है। स्पष्ट है कि यदि हमें किसी समाज को समझना है तो ऐतिहासिक स्त्रोतों के साथ – साथ साहित्यिक ग्रंथों से भी तथ्यों की पुष्टि की जा सकती है। इसलिए केवल इतिहास पढ़कर हम किसी समाज की व्यवस्था को पूर्ण रूप से नहीं समझ सकते और किसी भाषा के साहित्य को पढ़ने के लिए दो

ही माध्यम उपलब्ध हो सकते हैं या तो संबंधित साहित्यिक भाषा पर पकड़ हो या फिर उस साहित्य का हमारी भाषा में अनुवाद उपलब्ध हो। जहां तक भाषा सीखने की बात है तो दूसरी भाषा सीखना निःसंदेह अच्छी बात है। चूंकि यह प्रक्रिया लम्बी है और भाषा सीखने के बाद भी यदि उसमें हमारी अच्छी पकड़ न बन पाए तो हम उस भाषा में रचित साहित्य के भाव को पूर्णतः नहीं समझ पाएंगे। इसलिए अनुवाद इसका सबसे सरल और सशक्त माध्यम है। वर्तमान में लगभग सभी भाषाओं में रचित साहित्य का भिन्न–भिन्न भाषाओं में अनुवाद हो रहा है जिसके कारण हमें न केवल साहित्य से जुड़ने बल्कि समाज से भी जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है, जो अनुवाद के महत्व को ही दर्शाता है।

इसके अलावा जनसंचार, सांस्कृतिक कार्यकलाप, ज्ञान–विज्ञान आदि अनेक ऐसे क्षेत्र हैं या यूं कहें कि हमारे जीवन से संबंधित लगभग प्रत्येक क्षेत्र में हमें अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। कभी दूसरे व्यक्ति की बात समझने के लिए तो कभी उसे अपनी बात समझाने के लिए। चूंकि विचारों का आदान – प्रदान मानव जीवन की बुनियादी जरूरत है और भारत जैसे बहुभाषी समाज में इस बुनियाद को मजबूत बनाने का कार्य अनुवाद सदियों से करता आ रहा है और भविष्य में भी इसकी आवश्यकता और अधिक प्रबल होगी।

M,- vke çdk'k cjok
अधिकारी (राजभाषा)
गेल (इंडिया) लिमिटेड
निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

आखिर कैसे करें सर्जना?

आखिर कैसे करें सर्जना ?
नाश–प्रलय में आज सृजन मस्तिष्क विलय होते जाते हैं,
भौतिकता के नील–निलय में प्राची–खग खोते जाते हैं।
खो जाते हैं शब्द सभी जब पन्ने है इतिहास पलटता,
सो जाते युगपरुष सभी, जब युग है अपने आप बदलता।
ना ही अनुभव, ना दिग्दर्शन, केवल अपनी बुद्धि और मन,
बिना किसी आधार–शिला के कैसे हो प्रासाद की रचना ?
आखिर कैसे करें सर्जना ?

हम आधुनिक कहाने वाले, उपकरणों से हैं घिरे हुए,
उपकरणों की दुनिया में हम, स्वयं उपकरण हैं बने हुए।
यह कैसा विज्ञान कि जिसने, सच्चा ज्ञान नहीं सिखलाया,
हममें भरकर स्वार्थ–भावना, मानवीयता को झुठलाया।
न ही रागिनी कोमलता की, न ही भावनाओं का सरगम
बिना किसी सहृदय कंठ के, कैसे गाएं प्रेम तर्जना?
आखिर कैसे करें सर्जना ?

ऐ विज्ञान ! गजब तू निकला, हमसे ही धोखे–धड़ियों में,
जीवन के सारे आदर्श, बदल डाले तूने घड़ियों में।
हमने की आशाएं तुझसे, पर तूने तोड़ा विश्वास
पहले था प्रिय–मेघों का भ्रम, पर अब सौदामिनि का त्रास।
ले जा अपनी सुख–सुविधाएं, अपने तथाकथित वरदान
फिर हमारी वही सभ्यता, वही संस्कृति का परिधान
ना ही नियमन, ना ही बन्धन, दिशाहीन स्वच्छंद युवक मन
बिना चरित्र प्राण के आखिर, कैसे हो जीवन की अर्जना ?
आखिर कैसे करें सर्जना?

vo/k'k dqekj ik.Mk;
निदेशक (उद्योग)
हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
संरक्षण भवन, 10 भीकाजी कामा प्लेस
नई दिल्ली – 110066

बेरंग सी इस जिंदगी में कुछ तो रंग भरें

mnkfl;k dh otg rk cgr g ftnxh e
ij octg [k'k jgu dk etk gh dN vkj g

जीवन पहले भी अपनी गति से बढ़ रहा था और रोज नई ख्वाहिशें हकीकत से रूबरू हो रही थी और आज भी स्थिति लगभग यही है। लेकिन आज से ढाई वर्ष पूर्व की स्थिति देखें तो इस बीच काफी कुछ बदल गया। एक बात है जो नहीं बदली कि संतुष्ट हम 2020 से पहले भी नहीं थे और आज भी नहीं हैं। लेकिन अब हममें से हर एक 2019 के समय की अपने जीवन में वापसी चाहता है क्योंकि अब इस परिस्थिति से बोझिल सा हो रहा है सब कुछ। रोज़ सुबह ऑफिस जाने को मन नहीं करता था। लगता है कि बस अब सुकून मिल जाए। जीवन पर ऐसा ब्रेक तो कभी भी किसी को नहीं चाहिए था। कभी–कभी ऐसा लगता है कि शायद ईश्वर ने सभी के मन की व्यथा पढ़ ली और 2019 के अंत में चीन से एक वायरस कहर के रूप में आया, जिसने निष्ठुरता की हद की। सभी के जीवन में ऐसा ब्रेक लगाया कि जिंदगी बदल गई। कैसी विडंबना है ये। जो लम्हे पहले आंखों में चुभ रहे थे अब तो बस उन्हीं बीते लम्हों की वापसी की उम्मीद लिए बैठे है, अब वही पल वापस आ जाएं तो जिंदगी सुकून से भर जाए। सच ही है जो हमारे पास है उसमें हमें संतोष नहीं और जब हाथों से निकल जा, तो उसकी यादें पीछा नहीं छोड़ती।

वर्ष 2020 के आगमन का जश्न अभी पूरी तरह मना भी नहीं पाए थे कि इस वैश्विक महामारी ने विश्व के विकसित, विकासशील या गरीब देश किसी को भी अपने दुष्प्रभाव से अछूता नहीं रखा। जिंदगी में जो गजब की रफ्तार थी, बिल्कुल थम सी गई। इसने तो जीवन के मायने ही बदल दिए। पहला सुख निरोगी काया है और जीवन की अनिवार्यता सादा जीवन और उच्च विचार है ये हमेशा के लिए याद आ गया जो अब तक केवल किताबों तक सीमित था।

वर्ष 2021 में इस बीमारी की दूसरी लहर ने हालात ऐसे बिगाड़े कि इतिहास गवाह रहेगा कि इतनी मौत का तांडव हमने कभी नहीं देखा। सदियों तक हम अपनी अगली जेनरेशन को इस भयावह बीमारी की कहानियां सुनाएंगे। मृत्यु भय ने मानव को मानवता से दूर कर दिया। हकीकत यह रही कि सोशल मीडिया ने लोगों की संवेदनाओं को विस्तार देने की बजाय संकुचित कर दिया। इन्तेहा यह हुई कि इस भौतिक युग में मन के जो दरवाजे पहले से ही बंद थे, उस पर हमने और मोटे ताले डाल दिए। रिश्तेदार करीबियों और दोस्तों का हाल–चाल तो जानने की कोशिश की लेकिन किसी को कोई आवश्यकता हुई तो दहशत के मारे मदद नहीं कर पाए। इस भीड़ में सभी ने स्वयं को प्राथमिकता दी, दुख इस बात का रहा कि एक ही परिवार में रहते हुए कोई किसी की मदद नहीं कर पाया ....ऐसी बेबसी और लाचारी भुलाई न जा सकेगी। वास्तव में इंसान सबसे ज्यादा स्वयं से ही प्यार करता है .....ये सच्चाई सामने आ गई। पहले अस्पताल में बैड गायब, फिर दवाइयां, फिर ऑक्सीजन, और साथ ही डॉक्टर भी। स्वास्थ्य सेवाएं ऐसी चरमराई कि चारों तरफ शवों के ढ़ेर ही ढ़ेर। लेकिन इन सब तकलीफों के बावजूद इस त्रासदी में भी लालची एवं स्वार्थी लोगों ने व्यापार किया। महामारी में ऐसी दानवता की कल्पना भी किसी ने नहीं की होगी। ये विचार मन में क्यों नहीं आया कि हम वही संस्कृति है, जो सोचा करते थे सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। हम कैसे ऐसी राह पर बढ़ गए। क्यों संवेदनाएं शून्य हो गई। इंसानियत शर्मशार हुई।

जीवनरक्षक दवाइयां और उपकरण मुँहमांगे दामों पर बिके। सारी संवेदनाएं रसातल में चली गईं। गरीब तो धन के अभाव में बिना इलाज के ही दुनिया से चला गया लेकिन अमीर के पैसों का अंबार भी उसे और उसके परिवार को जीवनदान न दे पाया। वास्तविकता खुल ही गई कि जीवन को बचाने के लिए धन ही काफी नहीं है। ये एक ऐतिहासिक घटना ही होगी कि इस वायरस की चपेट में आया कोई अस्पताल में इलाज के बावजूद चला गया और कोई घर पर भी ठीक रहा। ईश्वर की मर्जी कहें या काल का बुलावा .....लेकिन स्थिति ऐसी रही कि आज भी सोचकर मन सिहर उठता है।

इस वायरस ने हमारे सारे त्योहार सूने कर दिए। खुशी और गम में भी लोग पास नहीं आ रहे हैं। कोरोना संक्रमित मरीज के पास जाना तो दूर, उससे अलगाव ने बीमारी से ज्यादा मन को तोड़ दिया। किसी अपने की मौत पर भी करीबी साथ नहीं आए। मृतक का परिवार खुद को कितना अकेला और असहाय महसूस कर रहा है। यह सोचकर ही आंखों में आंसू आ जाते हैं कि ऐसे परिवारों को ढांढस बंधाने वाला कोई भी नहीं है, जिनके परिवारों में मौतें हुई उनका जीवन हमेशा के लिए बेरंग और सूना हो गया। किसी से मिलकर अंतिम पलों में अलविदा न कह पाने का दर्द जीवन भर तकलीफ देगा। हमारे संस्कार बीमारों का हाल जानने और उन पर दया प्रकट करने के रहे लेकिन ये सारे संस्कार भी भय ने लुप्त कर दिए। शवों को चार कंधे भी नसीब नहीं हुए। कोरोना के मृतकों की संतान

और परिवार ने अस्पताल में शव को लावारिस छोड़ दिया। कुछ स्थानों पर कोरोना मृतकों के शव लेने उनके परिजनों के न आने पर पुलिस ने और कहीं–कहीं अनजान लोगों ने भी मानवता का परिचय देते हुए दाह संस्कार किया। महामारी ने मनुष्य को एकांगी होने पर मजबूर कर दिया। ईसा पूर्व यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने कहा था कि ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है'' लेकिन इस दौरान हमारी सामाजिकता कहां गायब हो गई। जब भी यह संकट दूर होगा तब लोगों को सामाजिक जुड़ाव की कमी ज्यादा महसूस होगी लेकिन क्या अब एक दूसरे से उसी स्नेह के साथ मिल पाएंगे जैसा पहले था। कहीं न कहीं मन में बहुत कुछ टूटा जब किसी अपने से उम्मीद लगा, हमने मदद मांगी और वहां से कोई जवाब या लाचारी दर्शाई गई तो तकलीफ तो बहुत हुई और रिश्ते भी टूटे। इस महामारी ने सामाजिक दूरियां लाकर न केवल मित्रों और रिश्तेदारों को दूर कर दिया बल्कि हर रिश्ते के बीच खौफ तथा अलगाव की दीवार भी खड़ी कर दी है। सारी सीमाएं सिमट कर हमारे दरवाजों तक आ गईं हैं।

इस महामारी ने हमारे सामाजिक रिश्तों को जो अपूर्णीय क्षति पहंचाई है, उसकी भरपाई कैसे होगी और संकट के बाद का समाज कैसा होगा? प्रकृति की मार के आगे फिलहाल विज्ञान भी लाचार है, इसलिए बस थोड़ी दूरी बनाए रखिए .....लेकिन दिलों में दूरी नहीं।

हताश तो इस वायरस ने किया ही लेकिन कहीं न कहीं चंद लोग भीड़ से अलग चलते हुए मानव सेवा में तन–मन–धन लुटाते हुए भी नज़र आए जिन्होंने बेसहाराओं को अपने घर तक पहुंचाया और भोजन भी मुहैया कराया। हालात तो एक न एक दिन सुधर जाएंगे लेकिन ऐसे लोग हमारे दिलों में हमेशा रहेंगे। हम इस बात के लिए सरकारी तंत्रों के भी आभारी रहेंगे जिन्होंने जरूरतमंदों के लिए कई बेहतर योजना बनाईं और उन्हें कार्यान्वित भी किया। अभी भी स्वार्थी लोगों को संभलने का मौका है सही राह को चुनें और संकट की घड़ी में व्यापारी न बने।

दुआओं में बड़ी ताकत होती है। ये हर संकट से उबार लेती हैं तो आइए दुआ करें कि ये महामारी अब विश्व से खत्म हो, जिन्होंने अपने परिवार में किसी को खोया है, उन्हें ईश्वर इस दुख को सहने की ताकत दें और हमारे जीवन के सभी रंग वापस आएं, प्यार और सौहार्द का माहौल फिर से कायम हो। अब इस वायरस से किसी मां की गोद, किसी पत्नी की मांग का सिंदूर और किसी बच्चे के सर से मां–बाप का साया न हटे। हममें से कई लोगों ने अपनों को खोया है अपूर्णीय क्षति है ये। हम सभी का नैतिक दायित्व है कि हमारे आस–पास अगर ऐसा परिवार है तो हम सभी उन्हें स्नेह दें। उनकी तकलीफ तो नहीं कम कर सकते लेकिन भावनात्मक लगाव से उनके चेहरे पर कम से कम कुछ देर के लिए ही सही मुस्कान लाने का प्रयास करें। अगर आप दूसरे के लिए दया रखते हैं तो आपकी तकलीफें भी अवश्य कम होंगी। परमात्मा से कुछ भी छुपा नहीं है एक हाथ से दया का दामन थामे रहिए दूसरा हाथ तो परमात्मा स्वयं थाम लेगा।

सतर्क रहें, स्वच्छ रहें, स्वस्थ रहें और हमेशा साथ रहने के लिए तन की दूरी बना, रखें लेकिन मन के दरवाजे खोल दें और हर रिश्ते को भरपूर आत्मीयता दें क्योंकि समय की यही मांग है।

gj iy ,d lkl lcd fgLl l ?kV Tkkrh g
dkb th yrk g gj iy dk] fdlh dh dV tkrh g

जिंदगी बेहद खूबसूरत है इसके हर पल को सजाने की कोशिश करते रहिए और जो समय बीत गया, उससे सबक लेकर आगे आने वाले पल को भरपूर आनंद के साथ जिएं।

j[kk nc
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
केन्द्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

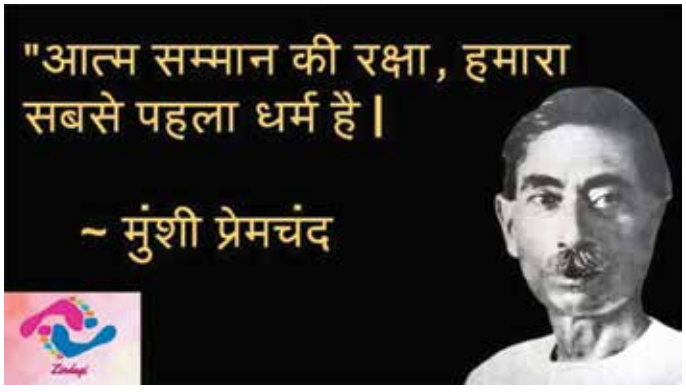

परोपकार भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग

प्रकृति का कण–कण हमें परोपकार की शिक्षा देता है। संस्कृत में एक सुभाषित है–

ficfUr un;% Loeo ukEHk%
Lo; u [kknfUr Qykfu o{kk%
uknfr lL;e [ky okfjokgk
ijkidkjk; lrk foHkr;%A

(वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाते और न ही नदी अपना जल स्वयं पीती है तथा बादल भी फसल का उपयोग स्वयं नहीं करते, बल्कि ये सभी दूसरों के लिए उपयोगी होते हैं। उसी प्रकार, महान लोग परोपकार के लिए ही पैदा होते हैं)

ईश्वर ने प्राणियों में मनुष्य को सबसे योग्य जीव बनाया है। अपने परोपकार के गुण के कारण ही मनुष्य पशु–पक्षियों से श्रेष्ठ माना जाता है। हमारा एक वैदिक मंत्र है– ^v?kkfn Hkofr doykfn* अर्थात् जो अपना बनाया खुद ही खाता है, वह पाप का भागी होता है। मुझे भली–भाँति याद है कि मेरी दादी जी, मेरी माँ और चाची जी जब रसोई में खाना बनाते समय आटा, चावल और दाल निकालती थीं तो उसे धोने/ गूँथने से पहले चुटकी निकालती थीं। चुटकी का तात्पर्य है कि राशन में से थोड़ी–थोड़ी मात्रा रोज निकालती थीं और पर्याप्त मात्रा एकत्र होने पर उसे किसी जरूरतमंद व्यक्ति को दे देती थीं। प्रतिदिन रात को जो खाना बनता था, उसमें से सभी पशुओं गाय, बैल, भैंस, कुत्ते आदि को कौरा खिलाया जाता था। यह परंपरा पूरे गाँव में प्रचलित थी। गाँवों में विशेष अवसरों पर पकवान बनाकर गाँव के गरीब लोगों में बाँटने की प्रथा भी बहुत पुरानी है।

यह परंपरा हमारी शेयरिंग एंड केयरिंग संस्कृति का प्रतीक है। यह इस बात का प्रमाण है कि भारत में लोक–मंगल, लोक कल्याण और दान–परोपकार हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। हमने सदैव सबको साथ लेकर चलने और सहयोग तथा वसुधैव कुटुम्बकं की संस्कृति को बढ़ावा दिया है। यही हमारी समृद्धि है और सांस्कृतिक विरासत भी। हमारे शास्त्रों और प्राचीन ग्रंथों में परोपकार की महिमा का बड़ा गौरवपूर्ण वर्णन किया गया है। इसे एक पुण्य कार्य माना गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है– परहित सरिस धर्म नहिं भाई, परपीड़ा सम नहिं अधमाई।। अर्थात् परोपकार के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के समान कोई पाप नहीं है।

हमारे ग्रंथों में इस बात के अनेक प्रमाण हैं कि हमारे पूर्वजों ने दूसरों के प्राणों की रक्षा के लिए अपने शरीर के अंगों को दान किया। महर्षि दधीचि का नाम किसे नहीं पता, जिन्होंने जन कल्याण हेतु वृत्तासुर के वध के लिए इन्द्र को अपनी हड्डियां तक दान कर दी थीं। इसी प्रकार, महाराजा शिवि ने शरणागत कबूतर के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर का मांस काटकर दान कर दिया था।

आयुर्विज्ञान के अनुसंधानों में हुई प्रगति के परिणामस्वरूप अब यह संस्कृति नए रूप में हमारे सामने आई है और "अंगदान के जरिए जीवनदान" की संकल्पना ने जन्म लिया है। अंधकारमय जीवन से संघर्षरत लोगों को नेत्रदान करके उनके जीवन में रोशनी भरने तथा रक्तदान एवं विभिन्न अंगों और ऊतकों (Tissues) का दान करके दूसरों के जीवन की रक्षा करने की संस्कृति को बढ़ावा मिला है।

दूसरे मनुष्य की सेवा ही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है और वास्तव में यही ईश्वर की सेवा है। किसी कवि ने लिखा भी है कि–

e ugh tkrk dHkh efnj vkj efLtn e vj ekFkk >dku
D;kfd eu nork dk ik fy;k g vkneh d eLdjku eA

जो पुण्य ईश्वर की आराधना से नहीं मिलता उससे बड़ा पुण्य किसी व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाकर मिलता है। लोक– मंगल और जन–सेवा की हमारी यही संस्कृति आज के परिवेश में नए रूप में हमारे सामने आई है। आज, जन–जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में इसका महत्व बढ़ा है। आज के प्रगतिशील समाज में हमारे सामाजिक ढांचे को हर प्रकार से संतुलित बनाए रखने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि जीवन रक्षा के साथ–साथ लोगों के जीवन स्तर को भी बेहतर बनाने का संकल्प लिया जाए।

अभाव से संघर्षरत लोगों के जीवन में खुशहाली लाने की संस्कृति का विकास किया जाए, उनके रहने के लिए बेहतर समाज का निर्माण किया जाए, उनके जीवन–यापन के लिए बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं और उनके स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिए चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। मशहूर शायर निदा फाजली जी ने लिखा भी है।

?kj ls efLtn gS cgqr nwj] pyks dqN ;w dj yas]
fdlh jksrs gq, cPps dks glk;k tk,A

अभाव में भाव पैदा कर देना और जरूरतमंद की जरूरतें पूरी कर देना तथा दुखी लोगों के जीवन में खुशहाली लाना ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व भी हमारी परोपकार और सहयोग की परंपरा का बदला हुआ रूप है। निगमों/कंपनियों की स्थापना देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान के लिए की गई है। अतः अपने आसपास के समाज और वातावरण के प्रति इनकी बड़ी जिम्मेदारी है। दूसरे, इन्हें अपने कार्यकलापों को पूरा करने के लिए प्रकृति और समाज से बहुत कुछ लेना पड़ता है, जिस पर हर व्यक्ति का अधिकार है। ये जहां एक ओर उस समाज को उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के दोहन में भागीदार बनते हैं, वहीं दूसरी ओर इनसे होने वाले रासायनिक उत्सर्जन वहां के लोगों के लिए हानिकर भी सिद्ध होते हैं। अतः इनके प्रचालन से प्रकृति और समाज को होने वाले नुकसान की क्षतिपूर्ति के लिए कारगर उपाय सोचना और उसे कार्यान्वित करना इन कंपनियों का नैतिक दायित्व है।

ईशोपनिषद में उल्लेख है कि–

Åa bZ'kkokL;fena lo± ;fRdap txR;ka txr
rsu R;äsu Hkq×thFkk ek x`/k% dL;fLo)uaA

(इस जगत में जो कुछ भी है, उसमें ईश्वर व्याप्त है अर्थात सब कुछ उसी का है, किसी भी व्यक्ति या समाज या संस्था का कुछ नहीं है। इसलिए, किसी भी वस्तु का उपयोग त्याग भाव के साथ करना चाहिए, मोह के साथ नहीं)।

जो वस्तु ईश्वर की है, उसके उपयोग के लिए हर व्यक्ति का बराबर का हक है। इसलिए, जिस समाज में हम रहते हैं, जहाँ की हवा में सांस लेते हैं और जहाँ अपना संपूर्ण कार्य व्यवहार संपन्न करते हैं, उसके प्रति हमें निश्चित रूप से ऋणी होना चाहिए। अतः कंपनियों की जिम्मेदारी है कि ये अपने आसपास के लोगों को सहारा दें, उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखें, शिक्षा की समुचित व्यवस्था उपलब्ध कराएं और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सहयोग करें। ये ऐसे उपायों और प्रयासों के लिए जिम्मेदार हैं, जो किसी व्यक्ति, संस्था या समूचे समाज की गुणवत्ता में सुधार लाने में योगदान करें। व्यवसाय का उद्देश्य केवल धन कमाना ही नहीं है, बल्कि देश के आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास और पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान करना इनकी वचनबद्धता और दायित्व है।

ये कंपनियां अपने इस दायित्व का निर्वहन सही ढंग से करें, इसके लिए भारत सरकार भी अत्यंत जागरूक है। ^fJ;k ns;a fâ;k ns;a* अर्थात् सामर्थ्य के अनुसार और विनम्रतापूर्वक दान करने की भारतीय उक्ति को चरितार्थ करते हुए भारत सरकार ने यह निर्देश जारी किया है कि प्रत्येक कंपनी पिछले तीन वर्षों के अपने औसत निवल लाभ का 2% हिस्सा सीएसआर पर खर्च करे।

बहुत–सी कॉर्पोरेट कंपनियों ने अपने इस दायित्व को भली–भांति समझा है और इस दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के साथ–साथ निजी क्षेत्र के टाटा, बिड़ला आदि समूहों ने भी सामाजिक उत्तरदायित्व को अपने कारोबार का महत्वपूर्ण अंग बनाया है। ये कंपनियां अपनी औद्योगिक इकाइयों के आसपास स्वास्थ्य रक्षा, भोजन की उपलब्धता, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, सड़क, बिजली, पर्यावरण संरक्षण आदि जैसी बुनियादी जरूरतों के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं।

भारत सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अनुपालन की मॉनीटरिंग के लिए समय–समय पर जाँच की जाती है। इस प्रकार, सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा अपने लाभ में से बहुत बड़ी राशि कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पर खर्च करना न केवल उनकी नैतिक जिम्मेदारी है, बल्कि विधिक अनिवार्यता भी है।

संस्कृत में कहा गया है–

nkr0;: bfr ;r~ nkua nh;rs vuqidkfj.ks
ns'ks dkys p ik=s p rn~nkua lkfRoda Le`ra

दान के लिए सुपात्र की पहचान करना आवश्यक है। गलत व्यक्ति को दिए गए दान का कोई उपयोग नहीं है। सात्विक दान वही है जो सही देश, काल और स्थान पर दिया जाए।

अतः सीएसआर के अंतर्गत अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का पालन करते हुए कम्पनियों को यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि वे अपने लाभ का जो हिस्सा खर्च कर रही हैं, वह सही व्यक्ति के लिए, सही स्थान पर और सही समय पर खर्च हो। साथ ही, यह भी सुनिश्चित किया जाए कि दान की वस्तु जरूरतमंद की जरूरत के अनुसार हो। अतः सीएसआर प्रणाली और गतिविधियों के चयन में सावधानी बरतने की जरूरत है, ताकि इनकी पारदर्शिता बनी रहे और इनका लाभ जरूरतमंद को मिल पाए।

अपने लिए तो सभी जीते हैं, परंतु जीवन वही सार्थक है, जो दूसरों के लिए जिया जाए। दूसरों का भला वही व्यक्ति कर सकता है, जो संवेदनशील हो और दूसरों के दुःख से दुःखी होना तथा दूसरों को खुश देखकर खुश होना उसके स्वभाव में हो। सज्जन होने का यही मापदंड है।

jfo'pUæks ?kuk o`{kk% unh xko'p lTtuk%A
,rs ijkidkjk; ;qxs nsou fufeZrkAA

सूर्य, चन्द्र, बादल, नदी, गाय और सज्जन – इन्हें हर युग में ब्रह्मा ने परोपकार के लिए निर्मित किए हैं।

pUædyk feJ
अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–राजभाषा)
कॉर्पोरेट कार्यालय, बीएचईएल

“जीवन का सच”

खुशियाँ कम और इच्छाएं बहुत हैं।
जिसे भी देखो दुखी बहुत है।
दूर से इसकी शान बहुत है।
मगर करीब से तो रेत का घर है।
कहते हैं सच का कोई तोड़ नहीं।
मगर आज झूठ की पहचान बहुत है।
मुश्किल से मिलता है शहर में आदमी,
यूँ तो कहने को इन्सान बहुत हैं।

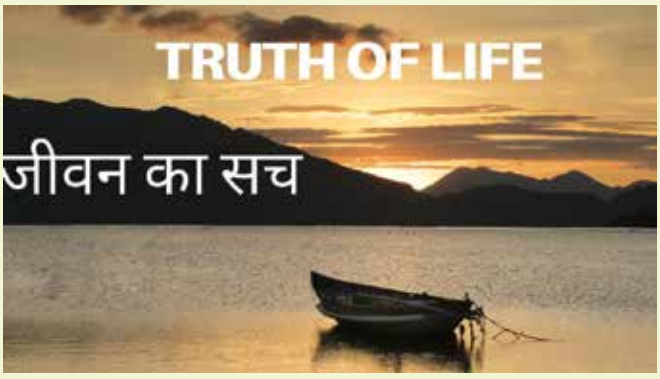

vuqt dqekj frokjh
प्रबंधक, बी ई एम एल लिमिटेड
नई दिल्ली

बिजली संयंत्रों में आई.ओ.टी. की तकनीक के उपयोग

¼jkt Hkk"kk mYykl io] 2020 d nkjku fnYyh ,o ,ulhvkj Lrj ,o d,ikjV dk;ky; Lrj ij vk;kftr rduhdh vkyk[k çfr;kfxrk e çFke ijLdkj l ijL—r½

बिजली संयंत्रों में आई.ओ.टी. के उपयोग को समझने से पहले आइए जानने की कोशिश करते हैं कि आई.ओ.टी की तकनीक क्या है तथा कैसे काम करती है? आई.ओ.टी की परिभाषा क्या है? इसका विस्तार क्या है?

आई.ओ.टी. का विस्तार है– इंटरनेट ऑफ थिंग्स। गूगल डिक्शनरी के अनुसार रोजमर्रा की वस्तुओं में एंबेडेड कंप्यूटिंग उपकरणों की सहायता से इंटरनेट के माध्यम से परस्पर संपर्क कर उन्हें डाटा भेजेने और प्राप्त करने में सक्षम बनाने की तकनीक को आई.ओ.टी. कहा जाता है।

सरल शब्दों में व्यक्त करें तो भौतिक वस्तुओं, जगहों तथा व्यक्तियों को आपस में किसी नेटवर्क पर जोड़ने की प्रक्रिया को ही 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स' या 'आई.ओ.टी.' का नाम दिया जाता है जहाँ पर ये सब एक दूसरे से संपर्क स्थापित कर सकते हैं तथा कोई एक्शन या कार्यवाही कर सकते हैं।

भौतिक वस्तुओं में कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट, स्मार्टफोन इत्यादि के अलावा फ्रिज, माइक्रोवेव ओवन, टेलीविजन, वाशिंग मशीन, कार, बाइक, स्टीम टरबाइन तथा ट्रांसफॉर्मर इत्यादि के अलावा वियरेबल गैजेट्स जैसे चश्में, घड़ी, हेलमेट व ड्रेस इत्यादि शामिल हैं। जगहों से हमारा अभिप्राय है जैसे हमारा घर, कमरा, रसोई, कार्यालय, पार्क, अस्पताल, फैक्ट्री, पावर प्लांट इत्यादि तथा इंसान से तात्पर्य हम सब जन से है।

ये सभी कनेक्टेड वस्तुएं आपस में तीन तरह से संपर्क स्थापित करती हैं, जो निम्न प्रकार से है:

ह्यूमन टू ह्यूमन (व्यक्ति से व्यक्ति) – जब किसी आई.ओ.टी. सिस्टम पर व्यक्ति आपस में एक दूसरे से कम्युनिकेट करते हैं तो उसे व्यक्ति से व्यक्ति का कम्युनिकेशन कहते हैं जिसे संक्षेप में एच. टू एच. लिखा जाता है।

ह्यूमन टू मशीन (व्यक्ति से व्यक्ति) – जब आई.ओ.टी. सिस्टम पर मौजूद वस्तुएं तथा मशीनें व्यक्तियों से कम्युनिकेट करती हैं तो इस स्थिति को एच. टू एम. कहते हैं।

मशीन टू मशीन – आई.ओ.टी. सिस्टम की अधिकतम सफलता इसी कम्युनिकेशन से निर्धारित हो रही है क्योंकि इस मॉडल में एक आई.ओ.टी. सिस्टम से जुड़ी हुई मशीनें आपस में ही कम्युनिकेट करती हैं और एक दूसरे से प्राप्त डाटा के आधार पर एक्शन लेती हैं।

vkbZ- vk- Vh- dh rduhd dl dke djrh g\

एक आई.ओ. टी. सिस्टम स्मार्ट डिवाइसों से मिलकर बना होता है जो डाटा एकत्र करने, भेजने तथा प्राप्त करने के लिए बिल्ट इन सेंसर्स, एंबेडेड प्रोसेसर्स तथा संचार तकनीक का उपयोग करते हैं। ये डिवाइस सभी डाटा अपने आसपास के वातावरण से ग्रहण करते हैं और उसे संबंधित आई.ओ.टी. गेटवे तक पहुंचा देते हैं, जहाँ पर डाटा का विश्लेषण किया जाता है और कौन सा डाटा सुरक्षित रखना है तथा किसे छोड़ देना है का फैसला भी डाटा सर्वर पर लिया जाता है। इस विश्लेषण से प्राप्त सूचना के आधार पर दिए गए पैटर्न का पता लगाया जाता है, सिफारिशें बताई जाती हैं और संभावित समस्याओं का पता लगाया जाता है।

इस प्रकार सारा कार्य कंप्यूटर सिस्टम की तर्ज पर किया जाता है। डिटेल लिया जाता है, उसे प्रोसेस किया जाता है और उसी डाटा के आधार पर कोई फैसला लिया जाता है। परंतु यहां पर बिग डाटा का विश्लेषण होता है क्योंकि डाटा निरंतर प्राप्त होता रहता है। इसलिए व्यापक स्तर पर डाटा की प्राप्ति होती है जिसे डाटा माइनिंग भी कहते हैं।

एक विद्युत संयंत्र या पावर प्लांट को चलाते हैं, तो आई.ओ. टी. की सहायता से आप यह जान सकते हैं कि पावर प्लांट में चल रही स्टीम टरबाइन या किसी अन्य उपकरण जैसे कि बॉयलर, ट्रांसफार्मर, एफ. जी. डी. इत्यादि में कब व कौन से पार्ट में समस्या आने वाली है तथा उस समस्या का समय पूर्व निदान कर कैसे आप पावर प्लांट की ऑपरेटिंग अवेलेबिलिटी या प्लांट लोड फैक्टर को बढ़ा सकते हैं। इस फीचर को प्रिडिक्टिव मेंटेनेंस भी कहा जाता है।

fctyh l;=k@ikoj IykV e vkbZ-vk-Vh- d çe[k mi;kx– आइए जानने की कोशिश करते हैं कि पावर प्लांट में आई.ओ.टी के क्या फायदे हैं तथा क्यों इस तकनीक का उपयोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है:

1- **,lV eutesV ;k ifjlifÙk çc/ku** & पावर संयंत्र अनेक जटिल उपकरणों तथा प्रक्रियाओं से बना एक महत्वपूर्ण ऐसेट या परिसंपत्ति है जिसका सुचारू प्रबंधन हर संस्थान या यूटिलिटी के लिए सर्वोपरि या सर्वोच्च प्राथमिकता वाला होता है। मशहूर कंसल्टिंग फर्म गार्टनर की रिसर्च या शोध के अनुसार एक सर्वे के दौरान जिन लोगों से यह पूछा गया कि अपनी संस्थान में आई.ओ.टी. के उपयोग के बारे में और इसे लागू करने के बारे में उनकी क्या राय है? लगभग 67% से अधिक लोगों ने इस सर्वे में कहा कि वे ऐसेट मैनेजमेंट के लिए जिसमें मुख्यतः प्रिडिक्टिव मेंटेनेंस शामिल है, इसका लाभ उठाने के लिए, आई.ओ.टी. को तुरंत प्रभाव से अपने संस्थान में लागू करना चाहते हैं ताकि वे अपनी मशीनों की उपलब्धता बढ़ा सकें, लाइफ साइकिल कॉस्ट या लागत घटा सकें तथा अधिक से अधिक राजस्व व लाभ की प्राप्ति कर सकें। यह बात हम सब लोग भली भाँति जानते हैं कि पावर प्लांट जैसे उद्योग या संयंत्र में उपलब्धता की अहम भूमिका होती है तथा आज के समय में यह और अधिक जरूरी हो गया है कि पावर संयंत्रों का ऑप्टिमम यूज किया जा सके। भारत सरकार जिस तरह सोलर व विंड पावर जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को प्राथमिकता देकर सन 2022 तक 175 गीगावाट के अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रही है, विशेषज्ञों का मानना है कि निकट भविष्य में सोलर पावर प्लांट बेस लोड के लिए तथा थर्मल पावर प्लांट बेलेंसिंग लोड के लिए प्रयोग में लाए जाएंगे। ऐसे में थर्मल पावर संयंत्रों को 'फ्लैक्सिबल ऑपरेशन' के लिए तैयार करने हेतु आई.ओ.टी. व इस से निकले डाटा के विश्लेषण की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। प्रिडिक्टिव मेंटेनेंस के जरिए ऐसेट मैनेजमेंट के अपने अलग फायदे हैं, जहाँ एक ओर पावर संयंत्रों को चलाने वाली कंपनियां जैसे एन.टी.पी.सी, एन. एल.सी. तथा राज्यों की पावर जेनरेशन कंपनियां जैसे टेनजेडको इत्यादि अपने प्लांट की उपलब्धता या ऑपरेटिंग अवेलेबिलिटी को बढ़ा सकती हैं, वहीं दूसरी ओर वे अपनी मशीनों के अनुरक्षण को प्लान कर सकती हैं तथा स्पेयर पार्ट इत्यादि को पहले से स्टोर कर अनिश्चतताओं को दूर कर सकती हैं।

2- **uohdj.kh; Åtk ¼fjU;,cy ,uth½ dk bVhxV@,dh–r dju e vkbZ-vk- Vh- dh Hkfedk** & आई. ओ. टी. की तकनीक जहाँ एक ओर थर्मल पावर संयंत्रों के उपकरणों की लाइफ को बढ़ाने में सहायक है, वहीं दूसरी ओर नवीकरणीय ऊर्जा को एकीकृत करने में भी मदद करती है। जैसे–जैसे ग्रिड में रिन्यूएबल एनर्जी का हिस्सा बढ़ेगा, ग्रिड की स्थिरता व स्टेबिलिटी के लिए बॉयलर, टरबाइन, जनरेटर व अन्य उपकरणों को त्वरित गति से चालू करना व उतनी ही त्वरित गति से बंद करना, कम लोड पर चलाना आदि तभी संभव हो पाएगा जब ये सब प्लांट एक स्मार्ट प्लांट की भांति कार्य करेंगे तथा स्मार्ट प्लांट बनाने में आई.ओ.टी. की तकनीक नितांत सहायक सिद्ध होती है। पावर प्लांट को

ऑप्टिमम एफिशिएंसी पर चलाने के लिए पूरे प्लांट के उपकरणों में सेंसर इत्यादि लगाकर सभी क्रिटिकल पैरामीटरों को मॉनिटर करना तथा बिग डाटा का सही से विश्लेषण कर इंटेलीजेंट डिसीजन आदि लेना आई. ओ. टी. की तकनीकी की ही देन व खूबी है।

3- vkb-vk-Vh- l fc t yh ;k ikoj l;= dk pyku oky dfe;k dh lj{kk e c<krjh & पावर संयंत्रों को चलाने वाले कर्मियों के लिए गैस लीक, आग, विस्फोट व अन्य ऐसे कई कारण हैं जो सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं तथा कई बार जानलेवा भी सिद्ध हो सकते हैं, विशेषतः ओ. एंड एम. में लगे हुए वे सभी कर्मी जो अपना काफी समय पावर प्लांट के अंदर ही व्यतीत करते हैं, स्वयं को अनेकों बार दुर्घटना के करीब पाते हैं।

आई.ओ.टी. के क्रियान्वयन से पावर संयंत्र के दिन–प्रतिदिन के ऑपरेशन को ऑटोमेट किया जा सकता है तथा सुचारु रूप से चलाया जा सकता है। आई. ओ. टी. से सुसज्जित किसी भी प्लांट में, जैसे ही कोई पैरामीटर अपनी नॉर्मल वर्किंग से हटकर दिखाई देता है, स्वतः ही उपकरण अपनी कार्यप्रणाली को बदल लेते हैं तथा प्लांट में बड़ी दुर्घटना होने से बच जाती है। 'रियल टाइम लोकेशन ट्रैकर' की सहायता से तुरंत घटनास्थल तक पहुंचा जा सकता है तथा घटना की जानकारी ईमेल, अलार्म, मैसेज व फोन आदि पर ऑटोमेटिक तरीके से आई.ओ.टी. सिस्टम के द्वारा प्रदान कराई जाती है। जैसा कि ऊपर भी उल्लेख किया गया है कि वियरेबल डिवाइस की सहायता से इंसान को भी आई.ओ.टी. सिस्टम का एक अभिन्न अंग बना दिया जाता है तथा उसके पल–पल की जानकारी हेलमेट, चश्मे, ड्रेस व घड़ी इत्यादि से सर्वर पर एकत्र की जा रही होती है।

उपसंहार– पावर प्लांट ऑटोमेशन की मांग दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पावर प्लांट की उत्पादकता व कार्य क्षमता को बढ़ाने हेतु सभी संगठन आई.ओ.टी. के प्रयोग पर बल देने लगे हैं तथा ऐसा माना जाता है कि सन 2020 के अंत तक लगभग 3100 करोड़ डिवाइस विश्व भर में कनेक्टेड या परस्पर जुड़े होंगे। आई.ओ.टी. की इस उन्नत तकनीक के दूरगामी परिणामों की वजह से ही इसे चौथी औद्योगिक क्रांति (इंडस्ट्री 4.0) का नाम भी दिया गया है। हमारी कंपनी बी. एच. ई. एल. भी अपनी व अपने कर्मियों की डोमेन एक्सपर्टीज का सदुपयोग करते हुए किसी बड़ी आई.टी. कम्पनी के साथ जुड़ कर व्यापक स्तर पर इंडस्ट्री 4.0 को लागू कर नए राजस्व प्राप्ति व लाभ के अवसर ढूंढ रही है। हमारी कंपनी को इस तकनीक से दोहरे लाभ होंगे, जहाँ एक ओर नए व्यापर क्षेत्र में प्रवेश करने से राजस्व की प्राप्ति होगी वही दूसरी ओर हमें अपने स्पेयर्स व् सर्विसेज के व्यापार को बढ़ाने में भी सहायता मिलेगी।

विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि सन 2020 के अंत तक लगभग 50% से ज्यादा नए व्यवसाय आई.ओ.टी. के प्रयोग से लैस होंगे। कनेक्टेड वर्कर सुरक्षा की दृष्टि से इंडस्ट्री में मानक बनने के अपने रास्ते पर अग्रसर है। चाहे पावर प्लांट हो या रिफाइनरी, फर्टिलाइजर प्लांट, स्टील प्लांट या कोयले की खदान अपने कार्मिकों की सुरक्षा व अपने संगठन की व्यावसायिक सफलता के लिए सभी संस्थान आई.ओ.टी. की तकनीक को अपनाकर इसके चहुँमुखी लाभ उठाने में लगे हैं। न केवल सुरक्षा अपितु प्लांट को पूर्णतः ऑटोमेट कर देने की खूबी की वजह से, प्लांट को चलाने की लागत में कमी आ जाने की वजह से तथा अनुरक्षण लागत कम हो जाने पर प्लांट की लाइफ बढ़ जाने से संस्थानों को और उनके प्रबंधन को बड़े लाभ की प्राप्ति हो रही है। यही कारण है कि आने वाले समय में आई.ओ.टी. न केवल उद्योग क्षेत्र में अपितु रक्षा, परिवहन, दूरसंचार, स्वास्थ्य तथा रिटेल व न जाने और कौन–कौन से क्षेत्रों में अपनी ख्याति के परचम लहराएगा। अंत में अपनी निम्न पंक्तियों के साथ मैं अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगा :

l[k lef) dk ey e=]
vkb-vk-Vh- l yl gk gj ikoj l;=

fjr'k ;kno
उप महाप्रबंधक, सी टी एम
कॉर्पोरेट कार्यालय
बीएचईएल, नई दिल्ली

मसाले एवं स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव

खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिए हम हर तरह के मसालों का उपयोग करते हैं। लेकिन इन मसालों में रोग निवारक गुण भी मौजूद होते हैं। इसका इस्तेमाल औषधि के रूप में किया जाता है। सामान्य रोगों में ये घरेलू नुस्खे अत्यंत कारगर होते हैं।

1- ghx %

हींग को भूनकर या सेक कर इस्तेमाल करना चाहिए। पेट में गैस, पेट फूलना, पेट के दर्द में नाभि के आस पास हींग का लेप लगाने से तुरंत आराम मिलता है।

हींग को पानी में उबालकर उस पानी से कुल्ला करने से दाँत का दर्द दूर हो जाता है एवं इससे कीड़े भी मर जाते है।

शुद्ध हींग, नींबू सत्व और काली मिर्च के चूर्ण को समान मात्रा में मिलाकर इसका सेवन करने से जी मिचलाने की शिकायत दूर हो जाती है।

2- /kfu;k %

शरीर के किसी भी हिस्से में सूजन या जलन हो तो धनिया पाउडर को सिरके में मिलाकर लेप लगा लें। इससे तुरंत आराम मिलता है।

हरा धनिया, काली मिर्च, काला नमक तथा पिसा हुआ जीरा सबको मिलाकर चटनी बनाकर सेवन करने से कब्ज की शिकायत दूर हो जाती है।

पेट मे दर्द अथवा जलन होने पर धनिया का पाउडर एवं मिश्री के साथ शर्बत बनाकर पीने से पेट दर्द से राहत मिलती है।

3- yoax %

लवंग को चूसने से सर्दी से हुई गले की तकलीफ ठीक हो जाती है। हींग लवंग को पानी के साथ पीसकर एवं थोड़ा गरम करके सिर पर लेप करने से सिरदर्द से राहत मिलती है। लवंग को पानी के साथ पीसकर उसमे मिश्री मिलाकर 200 मी. ली. पानी में घोलकर पीने से हृदय की जलन शांत होती है।

4- lkSaQ %

रात को सोते समय गुनगुने पानी के साथ सौंफ का चूर्ण लें। इससे कब्ज की शिकायत दूर होती है।

गले में खराश होने पर सुबह सौफ चबाकर खाने से बंद गला खुल जाता है।

पेट में दर्द होने पर भुनी हुई सौंफ चबाने से तुरंत आराम मिलता है।

सौंफ में सेंधा नमक मिलाकर नींबू के साथ खाने से खाना पचता है एवं मुँह की दुर्गंध दूर करता है।

Kku çdk'k j:tu
मुख्य मानव संसाधन
हिंदुस्तान प्रीफैब लिमिटेड
जंगपुरा, न्यू दिल्ली

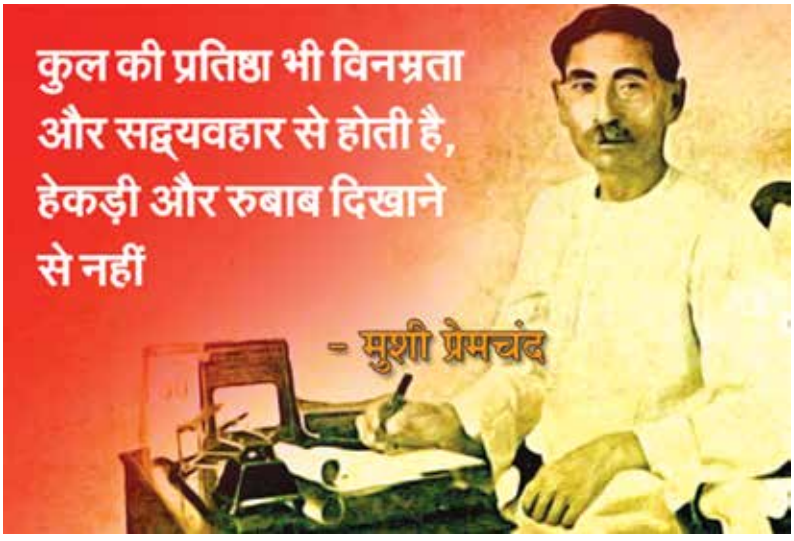

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1)
दिल्ली सचिवालय

v/;{k	lnL;	ekxZn'kZd	lnL;&lfpo
Jh lqtho dqekj] Hkk-iz-l- अध्यक्ष, भाविप्रा	Jh ,d ikBd सदस्य (मानव संसाधन), भाविप्रा	Jh jfodkr कार्यपालक निदेशक (प्रशासन), भाविप्रा	lqtho dqekj l;qä egkçcU/kd ¼jktHkk"kk½

नराकास (उपक्रम-1) दिल्ली के सभी उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा प्रमुखों का विवरण

dk;kZy; dk uke	dk;kZy; izeq[k	jktHkk"kk izeq[k
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड bLikr Hkou] yksnh jksM] ubZ fnYyh&110003	 Jh lehj Lo:i कार्यपालक निदेशक (कार्मिक एवं प्रशासन)	 Jh jktho 'kekZ उप महाप्रबंधक(कार्मिक–राजभाषा)
हिन्दुस्तान पैट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड-मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय-रिटेल 8oha eafty] dksj&2] Ldksi ehukj] fMfLVªDV lsaVj] y{eh uxj] fnYyh&110092	 Jh jktho egrkuh मुख्य महाप्रबन्धक–रिटेल	 jes'k pan मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)
भारत पर्यटन विकास निगम लिमिटेड Ldksi dkEIysDl] dksj&8] NBh eafty] 7] yksnh jksM] ubZ fnYyh&110003	 Jh th deyo/kZu jko] vkbZ,,l प्रबंध निदेशक	 lqJh 'kf'k egr प्रबंधक (राजभाषा)

dk;ky; dk uke	dk;ky; ie[k	jkt Hkk"kk ie[k
हिन्दुस्तान प्रीफैब लिमिटेड t xi jk ¼gkmf l x QDVjh½] ubl fnYyh&110014	 Jh xj thr flg f<Yyk अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 Kku idk'k jtu मुख्य मानव संसाधन
एम.एम.टी.सी. लिमिटेड dkj&1] Ldki d,EIyDl] yknh jkM] ubl fnYyh&1110003	 Jh foHk uk;j अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 Jh egUæ flg मुख्य प्रबंधक(राजभाषा)
बामर लारी एंड कंपनी लिमिटेड ,u vkj vk] çFke ry] ,u ch lh lh dæ] IykV u 2] vk[kyk Q t&1] ubl fnYyh&110020	 Jh v'kkd dekj xIrk उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) – उत्तरीय क्षेत्र	 Mk- jk?koæ dekj 'kek वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा एवं प्रशासन)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड- उद्योगक्षेत्र ,dh—r dk;ky; ifjlj] bLikr Hkou] yk/kh jkM] ubl fnYyh&110003	 t; çdk'k JhokLro कार्यपालक निदेशक(उद्योग क्षेत्र)	 —ikjke ygdjk वरिष्ठ उप महाप्रबंधक(मा.सं.– राजभाषा)
नेशनल शेडयूल्ड कास्ट्स फाइनेंस एंड डेवलपमेंट कॉरपोरेशन Ldki ehukj] 14oh efty] dkj&1 o 2] fMfLVDV lVj] y{eh uxj] fnYyh&110092	 Jh jtuh'k tuo अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक (कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष)	 Jherh vUu Hkkxy कंपनी सचिव एवं उमप्र (राजभाषा)

dk;kZy; dk uke	dk;kZy; izeq[k	jktHkk"kk izeq[k
पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड Åtkfuf/k 1] ckjk[kEck ysu] du,V Iysl] ubZ fnYyh&110001	 Jh jfoUæ flag f<Yyks अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 jfoUæ अधिकारी (राजभाषा)
भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड bZlhbZ gkml] 28&,] dLrwjck xka/kh ekxZ] ubZ fnYyh &110001	 ,e- ,l- [kku कार्यकारी निदेशक (निगमित समन्वयन एवं संवर्धन)	 Jh vrqy egjk महाप्रबन्धक (समन्वयन)
स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, केन्द्रीय विपणन संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, उत्तरी क्षेत्र Ldksi ehukj] dkj&2] fMfLVªDV lsUVj] y{ehuxj] fnYyh&110092	 Jh vfHkthr dqekj मुख्य महाप्रबन्धक(विक्रय) एवं क्षेत्रीय प्रबन्धक	 lqJh ehuk jkuh uk;d वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड nhun;ky Åtkz Hkou] 5] uSYlu eaMsyk ekxZ] olar dqt] ubZ fnYyh&110 070	 Jh d- ,l- jk/kkok समूह महाप्रबंधक – प्रधान समन्वय एवं प्रधान निगमित मामले और संसदीय समूह	 lqJh lt; orh वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड egkuxjnjlapkj lnu] 9] dsnzh; dk;kZy; ifjlj] yksnh jksM] ubZ fnYyh&110003	 Jh ih dss ijokj अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 Jh y{eh çlkn उप प्रबन्धक (राजभाषा)

dk;kZy; dk uke	dk;kZy; izeq[k	jktHkk"kk izeq[k
सेंट्रल रेलसाइड वेअरहाउस कंपनी लिमिटेड o.;jgkmfl x Hkou] 4@1] lhjh bLVhP;w'kuy ,fj;k] vxLr Økfr ekxZ] gkSt [kkl] ubZ fnYyh&110016	 Jh v#.k dqekj JhokLro प्रबन्ध निदेशक एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	 Jh fjrq'k वरिष्ठ प्रबन्धक (मानव संसाधन) एवं राजभाषा अधिकारी
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड - संपर्क कार्यालय ,uchlh Iykt+k] prqFkZ Vkoj] prqFkZ ry iq"i fogkj] lkdsr] ubZ fnYyh&110017	 Jh dq lh lkgw महाप्रबंधक	 Jh vfHk"ksd dqekj प्रबंधक
गेल इंडिया लिमिटेड 16] Hkhdkth dkek Iysl] vkj-d- iqje] ubZ fnYyh&110066	 Jh eukst tSu अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	 Jh ih- ukxUæ मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा)
भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड- कार्पोरेट कार्यालय ch,pbZ,y gkml] lhjh QksVZ] ubZ fnYyh&110049	 Jh ,e blknkj महाप्रबंधक एवं प्रमुख	 lqJh pUædyk feJ अपर महाप्रबन्धक (राजभाषा)
इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स(इंडिया) लिमिटेड Ldksi d,EIySDl] dksj&3] 7] ykdh jksM] ubZ fnYyh&110003	 Jh Mh-,l- jk.kk अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक	 M,-euh"k 'kdjko xobZ प्रबंधक ग्रेड–II राजभाषा प्रभाग

dk;kZy; dk uke	dk;kZy; izeq[k	jktHkk"kk izeq[k
भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड d,ud,j Hkou] lh&3] eFkqjk jksM] vikyks vLirky ds lkeus] ubZ fnYyh & 110076	 Jh oh-dY;k.k jkek अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 M, vkyksd cMdqy कार्यपालक निदेशक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी
इंडियन रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी लिमिटेड (इरेडा) rhljk ry] vxLr Økfr Hkou] Hkhdkth dkek Iysl] ubZ fnYyh & 110066	 Jh çnhi dqekj nkl अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 lqJh lxhrk JhokLro प्रमुख प्रबन्धक (राजभाषा)
इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड dkj&2]Ldksi d,EyhDl] 7] bLVhVîw'kuy ,fj;k] yksnh jksM] ubZ fnYyh	 Jh dqyk'k ifr कार्यकारी निदेशक प्रभारी (मानव संसाधन)	 Jh fot; dqekj 'kekZ मुख्य राजभाषा अधिकारी
हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड Ldksi ehukj] nlijk ry] dkj&2] ukFkZ Vkoj] fMfLVªDV lsUVj] y{eh uxj] fnYyh&110092	 Jh tloar dqekj jktksjk सहायक महाप्रबंधक	 Jh v'kksd dqekj ik.Ms; कनिष्ठ प्रबन्धक
एनटीपीसी लिमिटेड ,uVhihlh dsæh; dk;kZy; bLvks lh lsDVj &24] uks,Mk	 Jh xqjnhi flag अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 Jh vrjflag xkSre उप महाप्रबन्धक (राजभाषा)

dk;kZy; dk uke	dk;kZy; izeq[k	jktHkk"kk izeq[k
केन्द्रीय भंडारण निगम-निगमित मुख्यालय 4@1] lhjh bLVhVîw'kuy ,fj;k] vxLr Økafr ekxZ] gkSt [kkl] ubZ fnYyh&110016	 Jh v#.k dqekj JhokLro प्रबंध निदेशक	 Jherh uerk ctkt प्रबंधक (राजभाषा)
इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड lh&4] fMfLVªDV lsaVj] lkdsr] ubZ fnYyh&110017	 Jh ;ksxs'k feJk अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 Jh uhjt xqIrk मुख्य राजभाषा अधिकारी
रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड Cykd&2] NBk ry] IysV ,] ,uchlhlh fcfYMax] bLV fdnobZ uxj] ubZ fnYyh&110023	 Jherh v#.kk flag अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 #fpjk pVthZ मुख्य राजभाषा अधिकारी
नेशनल टेक्सटाइल कॉर्पोरेशन लिमिटेड dkj&4] Ldksi d,EIysDl] 7] yksnh jksM] ubZ fnYyh&110003		
इंडियन रेलवे कैटरिंग व टूरिज्म कॉर्पोरेशन लिमिटेड ch&148] 12ou ry] LVsVLeSugkÅl] ckjk[kackjksM] ubZ fnYyh&110 001	 lqJh jtuh glhtk अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक	 Jh f'ko çdk'k nqcs प्रबंधक (राजभाषा)

dk;ky; dk uke	dk;ky; iie[k	jktHkk"kk iie[k
भारतीय होटल निगम लिमिटेड lUV,j gkVy ifjlj] bfnjk xk/kh vrjjk"Vh; ,;jikV] ubl fnYyh&110037	 nhid [kYyj मुख्य कार्यपालक अधिकारी	 Jh t; jktkdekj उपाध्यक्ष तकनीकी एवं राजभाषा अधिकारी
दि स्टेट ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड tokgj 0;kikj Hkou] VkYLVk; ekx] ubl fnYyh&110001	 ,l d eh.kk संयुक्त महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन)	 M,- txnh'k çlkn मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)/राजभाषा प्रमुख
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण-उत्तरी क्षेत्र मुख्यालय çpkyu dk;ky; ifjlj] jxijh] xMxko jkM] ubl fnYyh&110037	 Jh jkt'k fuydB f'kn क्षेत्रीय कार्यपालक निदेशक	 Jh l;Hkku xkre संयुक्त महाप्रबन्धक (राजभाषा)
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विकास एवं वित्त निगम (एनएमडीएफसी) çFke ry] dkj 1] Ldki ehukj] y{eh uxj] fMfLVDV lVj] fnYyh&110092	 M, jkd'k ljoky] vkbl,,l अध्यक्ष–सह–प्रबंध निदेशक	 Jh ,l ,e >k सहा. प्रबन्धक (राजभाषा)
एम.एस.टी.सी. लिमिटेड irk&30@31,] igyh eftyj thou fodkl Hkou] vklQ vyh jkM] ubl fnYyh] fnYyh&110006	 Jherh 'kkfyuh Hkêh क्षेत्रीय प्रबन्धक	 Jh çrhd lko सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

dk;ky; dk uke	dk;ky; izeq[k	jktHkk"kk izeq[k
बी.ई.एम.एल. लिमिटेड {k=h; dk;ky;] b,Q th,p] ^onuk^ fcfYMax] 11oh eftY] V,yLV,; ekxZ] ubZ fnYyh &110001	 Jh 'kkUruq j,; कार्यपालक निदेशक	 Jh jes'k pUæ 'kDy वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा)
भारत संचार निगम लिमिटेड 403] ch,l,u,y Hkou] gjh'kpUæ ekFkqj yu] tuiFk] ubZ fnYyh&110001	 Jh vkj d xk;y प्रधान महाप्रबन्धक(कार्मिक) व अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति	 lqJh vi.kk lu उपमंडल अभियंता (राजभाषा)
राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड - क्षेत्रीय कार्यालय fo'kk[kkiÙkue bLikr la;=] ,uchlhlh Iykt k] prFk V,oj] pkFkk ry] lDVj&5] i"i fogkj] lkdr] ubZ fnYyh&110017	 Jh lt; xxZ क्षेत्रीय प्रबन्धक(उत्तर)	
मेकॉन लिमिटेड Ldki ehukj] ukFk Vkoj] 13ok/15ok ry] y{eh uxj 0;kolkf;d dUæ] fnYyh&110092	 Jh me'k dekj fo'odek कार्यपालक निदेशक	 lqJh t;Jh lcukuh वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा
उत्तरी क्षेत्रीय भार प्रेषण केंद्र (POSCO) 18,] 'kghn thr flg ekxZ] dVokfj;k ljk;] ubZ fnYyh&110016	 Jh jktho dekj ikjoky मुख्य महाप्रबंधक (प्रभारी)	

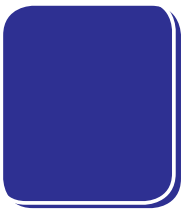

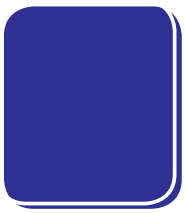

dk;ky; dk uke	dk;ky; ie[k	jktHkk"kk ie[k
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड 1] Hkhdkth dkek Iy;l] ubl fnYyh&110066	 l|Jh ofrdk 'kDyk अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक	 Jh uxæ dekj feJk सहायक महाप्रबन्धक
नालको - उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय dkj&4] 5ok ry] lkmFk V,oj] fMfLVDV lVj] Ldki ehukj] y{eh uxj] ubl fnYyh&110092	 M,- ç|Eu dekj ç/kku समूह महाप्रबंधक (निगम कार्य व विपणन)	 Jh fo|k 'kdj flg महा प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)
इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट्स(इंडिया) लिमिटेड, उत्तर क्षेत्रीय कार्यालय 5ok ry] Ldki d,EIyDl] dkj&3] 7] yknh jkM] ubl fnYyh&110003	 Jh ,l- glu महाप्रबंधक एवं प्रभारी	 Jh çoh.k çdk'k xIrk अतिरिक्त महाप्रबंधक
रेलटेल कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड- उत्तरी क्षेत्रीय कार्यालय NBk ry] Cy,d&3] fnYyh vkbl Vh ikd] 'kkL=h ikd] ubl fnYyh	 l|Jh fot;ky{eh dkf'kd कार्यपालक निदेशक	 Jh lfpnj dekj उ म प्र (कार्मिक एवं राजभाषा)
भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, विमानपत्तन निदेशक कार्यालय lQnjtx gokbl vìk] ubl fnYyh&110003	 Jh lt; dekj fl?ky विमानपत्तन निदेशक	 l|Jh ohuk vjkMk संयुक्त महाप्रबन्धक (राजभाषा)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम-1), दिल्ली के तत्वावधान में वर्ष,2021 के दौरान सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रकाशित श्रेष्ठ गृह पत्रिकाओं को प्रदान किए गए पुरस्कार

क्र. सं.	कार्यालय का नाम	पत्रिका का नाम	स्थान
1.	पावर फाइनेंस कार्पोरेशन लिमिटेड	ऊर्जा दीप्ति	प्रथम
2.	केंद्रीय भंडारण निगम	भंडारण भारती	द्वितीय
3.	भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, उद्योग क्षेत्र	दीपिका	तृतीय
4.	भारतीय कंटेनर निगम लिमिटेड	मधुभाषिका	चतुर्थ

'इंद्रप्रस्थ स्वर' के अंक 16 (जनवरी-दिसंबर, 2021) में प्रकाशित लेखों में से श्रेष्ठ लेखों को पुरस्कार:

क्र. सं.	लेख का शीर्षक	लेखक(सुश्री / सर्वश्री)	कार्यालय	विधा
1.	ग्रीन एज डेटा सेंटर	सी के प्रसाद, कार्यपालक निदेशक	रेलटेल कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड	तकनीकी लेख
2.	पेड़ का दर्द	गौरव सक्सेना, उप महाप्रबंधक	बी ई एम एल	कविता
3.	निगेटिव बातें एवं उसके दुष्प्रभाव	ज्ञान प्रकाश रंजन मुख्य मानव संसाधन	हिंदुस्तान प्रीफैब लिमिटेड	लेख
4.	गेंद	सुखवीर कुमार भारद्वाज निजी सचिव	केंद्रीय भंडारण निगम	कहानी

श्रद्धांजलि

साहित्यकार "मुंशी प्रेमचंद"

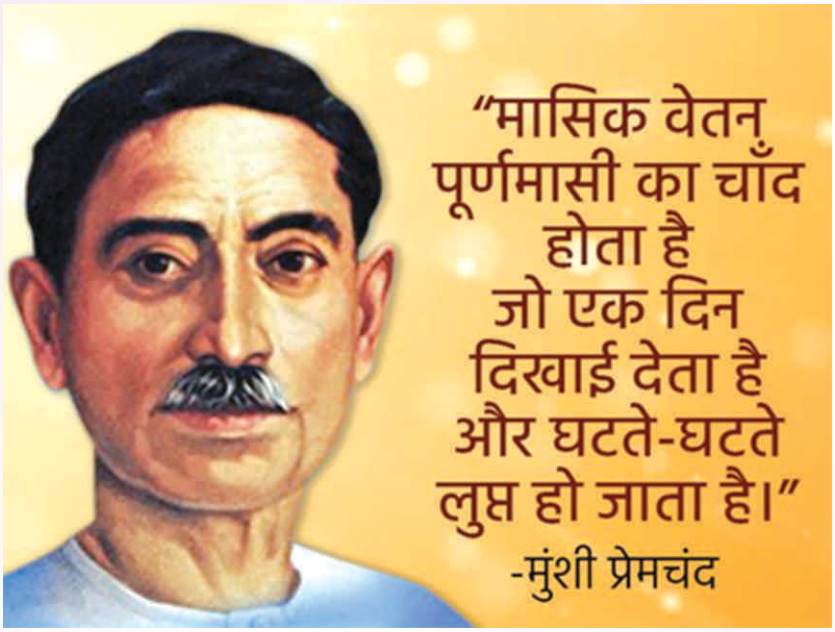

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले के लमही नामक गांव मे हुआ। इनकी माता का नाम आनंदी देवी एवं पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाक मुंशी थे 7 वर्ष की अवस्था में उनकी माता का तथा 16 वर्ष की अवस्था में उनके पिता का निधन हो गया। जिस कारण उनका प्रारंभिक जीवन संघर्ष में रहा। उनका मूल नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा फारसी में हुई। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। बी.ए. पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए। इनका पहला विवाह उस समय की परंपरा के अनुसार 15 वर्ष की उम्र में हुआ जो सफल नहीं रहा। 1906 में उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से दूसरा विवाह किया उनकी तीन संताने श्रीपत राय, अमृतराय और कमला देवी श्रीवास्तव हुई। 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी की सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून को त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होंने मर्यादा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में संपादक के रूप में कार्य किया।

उन्होंने हिंदी समाचार पत्र जागरण तथा साहित्यिक पत्रिका हंस का संपादन और प्रकाशन भी किया। उन्होंने मोहन दयाराम भवानानी की अजंता सिनेटोम कंपनी में कथा लेखक की नौकरी भी की। 1934 में आई फिल्म मजदूर की कहानी प्रेमचंद द्वारा ही लिखी गई है। जीवन के अंतिम दिनों तक वे साहित्यिक सृजन में लगे रहे। निरंतर बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण लंबी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
निगमित मुख्यालय
राजीव गांधी भवन, सफदरजंग हवाईअड्डा नई दिल्ली – 110 003
वेबसाइट : www.airportsindia.org.in & www.aai.aero